Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 17 अंक 04 30 अप्रैल 2017 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

जगत ताऊ चौधरी देवीलाल

पुण्य तिथि 6 अप्रैल पर विशेष

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

ताऊ देवीलाल सदैव दीनबंधुओं को सबसे हितैषी मानते थे और मुख्यमंत्री के तौर पर अपने आवास पर एक हुक्का हाउस बनवाया था जो सार्वजनिक स्थान था और अक्सर शाम इन्ही लोगों के साथ बिताते। उनकी सुनते अपनी सुनाते और उनके दुखदर्द के सहाई बनते। ऐसे लोगों से उन्हे गांव देहात की सच्ची खबर मिलती। इसी से प्रेरित होकर ही उन्होने 'प्रशासन आपके द्वार' कार्यक्रम शुरू किया। एक निश्चित दिन पूर्ण प्रशासन एक निश्चित गांव में पहुंचता और लोगों की समस्याएं सुन वहीं निजात भी दिलाता।

चौधरी देवीलाल के पार्थिव शरीर पर एक बुजूर्ग लिपट कर रोया था कि आज गरीबों का मसीहा चला गया। कवि ने प्रेरित होकर कहा था – ''बड़े शौक से सुन रहा था जमाना, तुम्ही सो गए दास्तां कहते-कहते।'' चौधरी देवीलाल ने कभी छल कपट की राजनीति नहीं की बल्कि उन्हे धोखा देकर भी राजनीति करने वाले अलग हुए लेकिन उन्होने बुरा नहीं माना तथा एकछत्र शहनशाह बने रहे। संघर्ष उनकी जीवन शैली थी, वे गुरू गोविंद सिंह के शब्द पर आयद रहते – ''सूरा सो पहचानवो जो लरै दीन की हेत, पुरजा-पुरजा कट मरे कबहू ना छोंरै खेत।'' वे सदा गरीब मजलूम और सत्य के साथ खड़े रहे। सरकारें आती जाती रही लेकिन वे कभी विचलित नहीं हुए। जो ठान लिया, वही किया। प्रधानमंत्री की गद्दी मिलने के बावजूद श्री वी पी सिंह को गद्दी पर बैठा दिया। उनका तप और त्याग यही था और उनके निर्बाध नेता बने रहने का राज। किसान मजदूर के वे सगे थे क्योंकि किसान को उसका हक नहीं मिलता, जब किसान को उसकी लागत की भी वसूली नहीं होती। जब उसने खुद ही घाटे की खेती की तो वे अपने साथी मजदूर को कहां से देगा। समाज में ताऊ की एक विशेष महता है। उन्होने यह मुकाम अपनी मेहनत, ईमानदरी और दूर-दृष्टि से हासिल किया और वे पूर्ण समाज के ताऊ बन गए और इस रिश्ते को निभाया भी पूरी शिद्दत के साथ।

ताऊ का सफर आसान ना था, जो मुकाम ताऊ देवीलाल ने अपने जीवन में ही हासिल कर लिया वह विश्व इतिहास में एक अनुठी मिशाल है। उन्होने यह सफर घर से ही अपनी हजारों एकड़ जमीन मुजारों को देकर, सर्वोदय में शामिल हो भू-दान आहूति देकर शुरू किया। वे सर्वदा एक यौद्धा की तरह संघर्षरत रहे और किसान, कामगार व काश्तकार के पैरोकार रहे। वे सत्ता में रहे या सत्ता से बाहर सदैव जन साधारण के हितों के लिए प्रयास करते रहे। मुख्यमंत्री के तौर पर 1987–89 में उनके पांव में सूजन आ गई लेकिन डाक्टरों की सलाह के बावजूद उन्होने आराम नहीं किया। उल्टे बर्फ की पट्टियां बांधकर सफर किया और सदा खेत खलिहान में हर एक का दुख सुख सुनने पहुंचते रहे। एक बार बाढ़ आई तो चौधरी साहब खुद कसी तसला लेकर हर गांव के गिर्द रिंग बांध बनाने पहुंच गए। फसल के आसार अच्छे न हो, देरी हो रही हो वे अपनी भूमिका कभी नहीं भूले। फसल बुआई में देरी के मद्देनजर उन्होने सरकारी तौर पर ट्रैक्टरों की व्यवस्था करवाई और सरसों की बुआई करवाई।

आज किसान की फसलों के लागत मुल्यों में निरंतर हो रही वृद्धि पर किसी को चिंता नहीं है। गत दशकों में किसान की लागत में इजाफा ही हुआ है, कहीं भरपाई का नामो निशान नहीं। क्या इस अवस्था में चौधरी देवी लाल कभी चुप बैठ सकते थे? उन्होने विवधिकरण से नकद राशी वाली फसलों को सुझाया, प्रयोगशाला से किसान के खेत तक योजना चालू करवाई ताकि किसान के घर सुख समृद्धि आए, उसके बच्चे पढें लिखें तथा सम्मान से जीवन यापन कर सकें। इसी लिए आज हरियाणा का बच्चा-बच्चा पुकार पुकार कर कह रहा है ''उठ दर्द मदां दे दर्ददिया ते तक अपना अस्थान'' किसान के खेत को पानी नहीं, उसके बेटे को उचित शिक्षा नहीं, अगर वो पढ गया तो रोजगार नहीं। आज फिर मांग हो रही है, ताऊ आए और – ''भ्रष्टाचार बंद, पानी का प्रबंध'' करे, किसान के खेत तक पानी पहुंचाने के लिए पक्के खालों की व्यवस्था का जीर्णोद्वार हो। प्रशासन पुन: जनता के दरबार में आए 'कन्या दान' वृद्धावस्था सम्मान पैशन जैसी कल्याणकारी योजनाएं सुचारू हो। आज कागजों में सब कुछ है क्योंकि ताऊ द्वारा शुरू की गई जन कल्याणकारी योजनाओं को हटाना संभव नहीं अन्यथा यह भी हो जाता। लोक राज लोक लाज से ही चले, कोरे आश्वासनों से केवल जनता को लंबे अर्से तक गुमराह किया जा सकता है।

चौधरी देवी लाल किसान, गरीब, मजदूर किसी की भी आपदा के लिए वे द्रवित हो उठते थे। उनके द्वारा किसानों के ऋण माफ करना तथा उनकी भूमि के रिकार्ड के उचित रख रखाव हेतू किसान पास बुक शुरू करवाना गरीब, किसान-काश्तकार के हित में महत्वपूर्ण प्रयास थे। सर छोटू राम जैसे महान नेताओं ने किसान के हित की बात सोची लेकिन किसान की हर दिक्कत, मौसम की खराबी, हर हाथ को रोटी, हर खेत को पानी, शिक्षा का प्रचार प्रसार, शहरीकरण की होड़ में देहात से शहर की

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1
ओर हो रहे पलायन की रोकथाम हेतू चौधरी देवीलाल ही सोच सकते थे। उनकी कथनी और करनी में अंतर ना था, वे गांधी जी के उपासक थे क्योंकि महात्मा गांधी जी ने कहा था कि वास्तविक भारत गांव में बसता है। भारत की 80 प्रतिशत आबादी देहात में बसती है लेकिन सुविधाओं की कमी इसी क्षेत्र में है। चौधरी देवीलाल ने देहात में ही सहुलियतें उपलब्ध करवाने की सोची। प्रति व्यक्ति प्रतिदिन एक निश्चित मात्रा में पानी की उपलब्धता, हर गांव तक पक्की सड़क, गरीब मजदूर के घर में एक बल्ब रोशनी के लिए प्रावधान, मानव तथा पशु चिकित्सा की व्यवस्था, गांव गांव में स्कूल तथा घुमंतू परिवारों के बच्चों को स्कूल में रखने के हाजरी के लिए प्रतिदिन एक रूपया देना। सरकार आपके द्वार कार्यक्रम शुरू कर देहात से पलायन को रोकने का प्रयास किया। बुढापा सम्मान पैंशन योजना शुरू कर बुजुर्गो को सम्मान दिया। आज सरकार बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ की बात कर रही है जो चौधरी देवीलाल ने अपने जीवन काल में ही महिला प्रसूति पर जच्चा-बच्चा योजना व सुखमय विवाहित जीवन हेतू कन्यादान योजना शुरू की तथा कन्या शिक्षा की ओर पग उठाए। कन्या को निशुल्क शिक्षा तथा स्कूल के लिए साईकिल उनके सपूत चौधरी औमप्रकाश चौटाला ने उपलब्ध करवाए।

ताऊ देवीलाल का अटूट विश्वास वर्गहीन, जातिवाद धर्मविहिन, भेदभाव रहित और कुटविहिन लोकतांत्रिक व्यवस्था में था। वे मानव कल्याण को सर्वोपरि महत्व देते थे। उनकी राजनीति केवल जनहित पर आधारित थी। उनका प्रयास था समाज का शोषित वर्ग, शोषण मुक्त हो और जो आर्थिक कारणों से पिछड़े हुए हैं उन्हे उससे मुक्त करवाया जाये तथा जन जीवन मुल्यों के प्रति आस्था पैदा की जाये। घोर निराशा, अनास्था और भ्रष्ठता के चंगुल में फंसी करोंड़ों को मार्ग दर्शाने में उन्होने विशिष्ठ भूमिका निभाई। ताऊ देवीलाल ने राजनीतिज्ञों के लिए लोकलाज के आदर्श के अंतर्गत आचार संहिता लाने पर बल दिया और कभी भी सत्ता की राजनीति नहीं की बल्कि उनका ध्येय जनसेवा का मूलमंत्र था ना कि सत्ता सुख भोगने का।

वे समाज के हर वर्ग से मिट्टी के कण-कण की तरह जुड़े हुए व पूर्णतया ग्रामीण पृष्ठभूमि के धनी चौ0 देवीलाल का जन्म 25 सितंबर सन 1914 को हरियाणा के सिरसा जिले के गांव तेजा खेड़ा के एक संपन्न किसान परिवार में हुआ। युगपुरूष चौ0 देवीलाल भारतवर्ष के एक ऐसे नेता रहे हैं, जिनका संपूर्ण जीवन संघर्षो से भरा हुआ है। आजादी से पहले आजादी के बाद के इतिहास को देखा जाए तो संघर्ष के उल्लेख में चौ0 देवीलाल का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा नजर आता है। ये संघर्ष सदैव किसानों, गरीबों, मजदूरों और समाज के कमजोर वर्गों को न्याय दिलाने के लिए रहा। महज 16 वर्ष की आयु में ही सन 1930 में महात्मा गांधी के आह्वान पर अपनी पढ़ाई बीच में छोड़कर भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े। आजादी के आंदोलन में पहली बार जेल भेज दिए तथा स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के दौरान सात बार जेल काटनी पड़ी।

छोटे काश्तकारों को उनका अधिकार दिलाने हेतू पंजाब विधानसभा में भू-पट्टेदारी अधिनियम 1953 बनवाकर मुजारों की बेदखली को रोका गया। इस अधिनियम के द्वारा 6 साल से भूमि काश्त कर रहे मुजारों को अदालत के माध्यम से आसान किश्तों पर जमीन खरीदने का अधिकार दिलाकर मालिकाना हक भी दिलवाया। सरकारी कोष से जारी धनराशी के सदुपयोग व ग्रामीण समाज के समुचित विकास के लिए ग्रामीण जनता द्वारा एकत्रित धनराशी पर सरकारी खजाने से दो या तीन गुणा अनुदान दिलाकर मैचिंग ग्रांट योजना शुरू करने व राज्य कोष से जारी धनराशी को सीधे पंचायत व ब्लाक स्तर पर खर्च करने के पारदर्शी व स्पष्ट प्रावधान लागू किए।

अपने संघर्षशील जीवन में चौ0 देवीलाल हार-जीत का परवाह किए बिना निष्काम सेवा भाव से जनता का प्रतिनिधित्व करते रहे। वे सन् 1952, सन् 1959, सन् 1962 में तीन बार पंजाब विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए तथा संयुक्त पंजाब में मुख्य संसदीय सचिव भी रहे। वे अपनी दूरदर्शी व पारदर्शी सोच के द्वारा हर प्रकार की समस्या का समाधान निकाल लेते थे। राष्ट्रहित में किसी भी राजनैतिक व सामाजिक मुद्दे पर वे अपने विरोधियों तक से भी सलाह मश्विवरा करने में संकोच नहीं करते थे। अपनी निष्कपट, निस्वार्थ व त्यागी छवि के कारण वे समस्त राष्ट्र में 'ताऊ' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इसीलिए उन्होने सतलुज यमुना लिंक नहर के मुद्दे पर 14-08-1985 को अपने 7 तमाम विधायकों के साथ विधानसभा से इस्तिफा दे दिया और 1987 में 90 में से 85 विधायकों के विशाल बहुमत के साथ पुनःचुने गए।

पुलिस प्रशासन को चुस्त-दुरूस्त करने हेतू पुलिस कर्मियों के लिए उन्हे समयबद्ध तरक्की देना, पूरे राज्य में खेलों को बढ़ावा देने के साथ-साथ पुलिस विभाग के खिलाड़ियों को भी खेल जगत में अव्वल प्रदर्शन करने पर विशेष तरक्की देना व ए एस आई के पद तक खिलाड़ी कोटे से 3 प्रतिशत विशेष भर्ती करने का प्रावधान आदि अनेकों कल्याणकारी योजनाएं शुरू की। कुश्ती जैसे परंपरागत खेल को पूरे राष्ट्र में सर्वप्रथम वर्ष 1988 में राज्य खेल घोषित किया और पुलिस में कार्यरत सिपाही पहलवान राजेंद्र सिंह को वर्ष 1978 में बैंकाक में हुए काम्नवैल्थ खेलों में स्वर्ण पदक जीतने पर सीधा निरीक्षक पदौन्नत कर दिया जो बाद में भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी रहे। अतः वास्तव में प्रदेश में खेलों के विकास की परंपरा जन नायक चौधरी देवीलाल ने शुरू की थी।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तर्ज पर उनकी भी यह सोच थी कि इस देश में असली साम्राज्य उस समय स्थापित होगा जब देश की सत्ता की बागडोर एक कामगार व किसान के हाथ में होगी। उनका विचार था देश के राष्ट्रपति की कुर्सी पर दलित व प्रधानमंत्री के पद पर किसान, कामगार को आसीन करके ही महात्मा गांधी का समृद्ध व स्वावलंबी भारत का सपना पूरा हो सकता है। वास्तव में जन नायक महान तपस्वी व त्याग की मूर्ति थे। उन्हे सत्ता का कभी मोह नहीं रहा। इसका जीता जागता उदाहरण यह है कि एक प्रभावशाली, कुशल राजनीतिज्ञ तथा सफल नेतृत्व के धनी होते हुए भी उन्होने दो बार अपने सिर से प्रधानमंत्री का ताज उतार दिया और स्वंय इसी ताज को श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह व चंद्रशेखर के सिर पर

रख दिया। उनके इस महान त्याग की भावना से आज उनके विरोधी भी मात खा रहे हैं। वे सदैव कहते थे कि ''मैं सत्ता के गलियारों की बजाए अपने प्रिय सीधे साधे लोगों के साथ रहना अधिक पसंद करता हूं''। उनका यह कथन दीन बंधू सर छोटूराम के विचारों के अनुकूल है क्योंकि दीन बंधु भी सदैव यह कहा करते थे ''नहीं चाहिए मुझे मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।'' उनका यह कथन भी जन प्रेम को दर्शाता है - मैं कभी भी सत्ता के पीछे नहीं भागा क्योंकि मैं हमेशा ऐसे लोगों के साथ रहा हूं जो सत्ता से बाहर रहकर भी अपनी न्यायोचित मांगों के लिए संघर्षरत रहे हैं।

चौ0 देवीलाल ने अपने शासनकाल में सबसे पहले गरीब-मजदूरों, छोटे दुकानदारों व काश्तकारों के व्यावसायिक व कृषि ऋण माफ करके समाज के सभी वर्गों को राहत पहुंचाने का कार्यक्रम शुरू किया। इसके अतिरिक्त उन्होने काश्तकारों व छोटे दुकानदारों को बैंकों से सस्ते ब्याज पर ऋण उपलब्ध करवाने व कृषि के लिए बिजली, पानी, उत्तम बीजों, उर्वरकों को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध करवाने तथा प्राकृतिक प्रकोपों से फसल नष्ट होने पर किसानों व काश्तकारों को उचित मुआवजा दिलवाने की व्यवस्था करके कृषि व इससे संबंधित कार्यों पर आधारित लगभग 80 प्रतिशत ग्रामीण जन संख्या के जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास किया। किसान के खेत के चारों तरफ सामाजिक वानिकी के वे कर्णधार थे ताकि किसान की फसल का नुकसान भी ना हो और वृक्षों से अतिरिक्त आय भी हो सके। किसान के खेत के साथ लगे सरकारी वृक्षों से छाया की वजह से किसान को हो रहे नुकसान की भरपाई के लिए उन्होने वृक्ष की आमदन में आधा हिस्सा किसान को दिलवाया था।

अंत में 6 अप्रैल 2001 को ताऊ देवीलाल चिरनिंद्रा में सदा के लिए सो गए और इस महान धरती पुत्र की आत्मा धरती में लीन हो गई।

आज आवश्यकता है कि ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुशरण किया जाए। इससे सरकारी नीति व कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निश्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की नितांत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब-मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ-साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब-मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्कता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सकें तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक स्वावलंबी व स्वस्थ ग्रामीण समाज का सपना पूरा किया जा सकता है। अत: एक उदार हृदय एवं महान आत्मा - ताऊ देवीलाल को लेखक सदैव नत मस्तक होकर प्रणाम करता रहेगा।

लेखक चौधरी साहब के उत्कृष्ठ प्रशासनिक अधिकारी तथा पुलिस प्रमुख (गुप्तचार विभाग) रहे हैं।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

Where India is heading for?

R.N Malik, 9911078502

The short, axiomatic and accomplished definition of "Hell" is a place where 7 attributes i.e. Poverty, insanitation, injustice, corruption, vote bank politics and social disorder are in full swing. This short definition of "Hell" fits very well on Indian situation. There are three international parameters which indicate the socio-economic development of a country. These are human development index (HDI), per capita income and ease of doing business. India lies at 130th place in all the three respects. Percentage of GDP growth indicates only an effort to move forward. But it is not a sure indicator for a country to become the future economic power house. India is having more than 6% growth since 1994 and still the tag of India being an under developed country remains intensely attached to her fair name. Three year BJP rule has brought little change in the economic fortunes of the country. Alas! It is very sad.

India gained Independence in August 1947 but the country started moving steadily in 1952 after holding the first general election. Taking 1952 is the base year, Indian democracy/governance is now 65 years old and the country is still afflicted with all the 7 ills mentioned above. Look at the small countries like Holland, Belgium, Poland and Singapore. Their economies and social structure were completely shattered during the Second World War. Poland was virtually decimated. But these countries got up quickly and are now miles ahead of India and still we don't feel ashamed of our lethargy. Take the case of China. Mao's Cultural Revolution caused equivalent damage to China's economic and social fabric what Second World War did to Europe and Japan. Then one alchemist or titan by the name of Deng Xio Ping came on the scene in 1977 and saved China from total anarchy and then laid the foundations for a great economic super power. What makes Indian situation most depressing is the fact that there is no fire in our bellies to catch up and excel other countries particularly when India is flushed with vast natural resources except oil and gas.

India looked to grow very buoyantly in 2008 when the GDP growth was 9%. It was largely due to external environment. Fortunately, US and Europe were importing manufactured items (particularly textiles) from India in large volumes. There was international IT boom. Real Estate sector also started growing very wildly. But such booms or swings are short lived and real economic strength is always derived from the operation of four factors within the country – control of population, massive infrastructure development, economic and administrative reforms, reasonable expenditure on poverty alleviation programs. Deng Xio Ping did exactly that. He immediately implemented the one-child-

policy. This simple step proved as the Brahmastra for sustainable and bright future for China. On the other hand, India is neglecting this explosive issue completely. We are adding one Australia to the national pool every year and the issue has now taken the shape of a Time Bomb. There has been tardy development on infrastructure front except in case of building more thermal power plants till 2014. Economic and administrative reforms were put on the back burner. Passage of GST bill will be the only exception. Poverty in UP will continue to persist till it is split into three states. But successive governments have been busy initiating populist programs and throw crumbs to the poor to keep them in good humor till the time of next elections (policy of appeasement). Food Security Bill and harsh amendments in Land Acquisition Act in 2009 are doing the greatest damage to the Indian economy. Managing Director of DMRC once exclaimed, "Thank God! We acquired sufficient land before the amendment of Land Acquisition Act." Now many links under Phase-3 program of DMRC are held up due to land acquisition issues only.

UPA 2 started performing very badly during the last three years of its term. GDP growth came down to 5%. The total thrust was to make the political coffers flush with funds by selling natural resources. It resulted in discovery of large number of scams by CAG. Mr. Narendra Modi, three times CM of Gujarat, on the other hand started over promoting his Gujarat Model of economic development though Gujarat excelled only in two fields i.e. power generation and spread of piped water supply network to all the villages. Consequently, people started looking at Shri Narendra Modi as the new development Goliath or Avtar. BJP rightly ignored L K Advani and declared Narendra Modi as the Prime Minister face of the Party for 2014 elections. The growing army of unemployed youths swayed the elections in favor of BJP and it came back to power with a thumping majority.

The new Prime Minister committed the same mistake as his predecessors had done in the past after Nehru. He did not draw the precise road map for economic development. Nor did he say a word on the most dangerous problem of population explosion. In fact, he committed the most cardinal mistake of scrapping the Planning Commission and replacing it with an effete organization called NITI AYOG. The result is that Five Year Plan model is lost forever and the country is now groping in the darkness without the searchlight of planning process. Success mantra of Japan is "Spend more time on planning and less on execution of a new project". We are doing the reverse. PM started the wonderful Swachh Bharat Abhiyan. It has now become a joke when one observes the heaps of stinking solid waste in open areas or along railway tracks. Skill India, Make in India, Digitalize India, Start-Up India and the likes are only paper dreams. The phase of visiting foreign capitals by PM to bring in FDI in torrents has proved to be a damp squib. No major investment has come during the last 3 years. POSCO (a Korean Company) came here in 2004 to set up a mega steel plant in Orissa. But it is still looking for the promised land. Two lac engineering graduates are coming out with engineering degrees every year. But advertisements for engineering vacancies in leading newspapers are almost nonexistent except for some educational institutes. The ambitious program of developing one lac MW of renewable energy by 2022 also seems to be a paper dream. The growth in water resources and hydro power development (the very essence of agricultural growth) is almost nonexistent. Progress in the discovery of hydro carbons within the country is notional. The PM has now adroitly shifted his goal posts from 2019 to 2022 so that people may not question his non-performance during his 2019 elections. The shape and configurations of his "New India by 2022" chant has not been described so far. He has never called a meeting of state Chief Ministers to synergize the economic development of the country. That is why CM's are treating states as their personal fiefs particularly the CM of Telangana. Only National Highway Authority of India (NHAI) and Coal India Limited (CIL) have made tangible progress. Indian Railways is struggling below poverty line because of low fares and 60% routes are grossly underutilized. There have been five serious rail accidents during last six months which speaks of very poor maintenance and surveillance of railway tracks. However, the two Freight Corridor projects initiated by the UPA 2 government may be completed by 2020. Fortunately, oil prices crashed in 2014 and that makes the current account deficit and fiscal deficit parameters to remain in comfortable zone.

Presently, Indian population is 1300 million and 55% people are below the age of 45 years. Rhetoric's of PM will not bring cheers anymore. He is now being called the seller of dreams (Sapno ka Saudagar). One is surprised what he will show in 2019 elections to bag for the votes. The land slide victory of BJP in UP and Uttrakhand elections is largely due to the famine of trustworthy leaders in the Opposition parties. Congress party is already working in self destructive mode. So BJP victory is like a goal scored from the penalty stroke in a Hockey or Football match. It is agreed that corruption at central level is reduced and credit for this effort squarely goes to Sh. Narendra Modi for his strictness. But it is in full swing at the state levels and 13 states are already under BJP rule.

The vast army of unemployed youths that brought BJP to power, now desperately wants Jobs to survive. Their hopes are gradually dashing to the ground and they are becoming restive day by day. Jobs have not been created because of tardy progress of infrastructure projects particularly in case of setting up SEZs and Model industrial parks along coastal areas. Aggressive development of solar energy provided the low hanging fruits which were not plucked quickly. Now the real threat to national solidarity and peace will come from this young battalion sooner than later. The present job less GDP growth at 7% rate brings no consolation so long as it does not generate sufficient employment opportunities. Accordingly, it looks putative in the face of the long and high wall of unemployment.

Now Kashmir is on fire and there is no national effort to douse this fire. The state is gradually sliding into a disaster. Problem of rising NPAs remains unresolved. Demonetization process misfired. Air India and state power utilities are under heavy debts. Debts on states is rising on an alarming scale. It varies from Rs 1.25 Lakh Cr to Rs 4.25 Lakh Cr. (Maharashtra State), on each state. 10% of this amount is paid back to the banks every year leaving little amount for development. Waving of farmer's loan will further complicate the matters. Farmers are committing suicides in central India because of lack of irrigation facilities. One state took loan from one national bank to pay the debt of another. Another state did similar exercise to disburse the salaries to its employees. Smart city projects is virtually a non-starter. Work on two rail coach factories at Madhepura and Sonipat has not started. So where is the Vikas? Vikas means launching of a large number of earth shaking projects like 3-Gorges dam in China or Bhakra Dam in India to provide large

scale employment. But such projects are not visible at the moment except in case of DMRC and two Freight Corridor projects initiated by previous government. The present government may be doing slightly better than the previous government but falls much short of expectation and requirements of present situation provided India has to dream big and occupy the place in the company of developed nations. Sometimes it appears that Sh. Narender Modi is developing himself in to a larger picture of Arvind Kejriwal.

Added to this is the problem of disruptive, polarizing, vote bank politics practiced by all the political parties (remember log jams in Parliament). Secularism, the essence of Indian Constitution is under a cloud. So, the landslide victory in UP elections has enhanced only the political stature of Sh. Narendra Modi. He still fails to earn the genuine respect of knowledgeable people. God has given him a rare opportunity to embark upon a program of eradicating poverty and beating China in the economic race. But he is frittering away that opportunity like his predecessor whom God gave two. At present, the success of a Government lies in achieving only two mile stones i.e. eradication of poverty and beating China in the economic race. The present Government is totally oblivious of the two targets and is busy only in advance preparation for 2019 elections and that too through the process of weakening and poaching on Opposition parties and not on the strength of its own achievements and good governance. In-fact the Govt is stressing more on social justice (Tripple Talaq, Backward class commission) than on infrastructure projects. The development agenda is now on the back burner. The slogan "Sabka Sath Sabka Vikash" has started looking hollow. By 2021 Indian population will be around 140 Cr and will become unmanageable and may lead to a La French Revolution by 2031.

Note;

(Let me clarify that I do not belong to any political party. I am a nationalist to the core and feel greatly concerned about the future of the country after looking at the political events taking place in the country and the slow progress on economic front. The rising population at present rate will be lead to social and economic chaos at anytime after 5 years. I wish I proved wrong.)

वैवाहिक विज्ञापन

Wanted Grooms

- SM4 Jat Girl 24.5/5'1" B.Ed, M.A. Econimics, Business man & Politician family at Chandigarh. Perfernce business man & Politician family. Avoid Gotra : Lakra, Panwar. Cont. 9216000072, 8595000008
- SM4 Jat Girl (DOB 24-07-1989) 27.5/5'5" B.Com (Hons), CS, TGDBAMBL, working as CS in a Company at Chdnaigarh. Avoid Gotra : Garhwal, Jakhar. Cont. 9464741686
- SM4 Jat Girl B.Tech. IIT, M.M.S., Ph.D. US h'some Hindu Jat boy Sept. 80/ 5'9" wkg S.F.USS, 2 L$ pa Dr. parents only child. U.CNB. Cont.: 8558811002
- SM4 slim Jat girl 28/5'3", M.Com, LLB, CS wkg CS. Prfd. HR/NCR. Avoid : Lamba, Panjeta, Kundu. Contact : 9310795250
- SM4 slim, fair, b'ful, 31/5'4" MCA Jat girl working in Pvt. Ltd. Com. Teacher. NRI prefd. Avoid : Ahlawat, Sehrawat, Pehal. Contact : 9355614485
- SM4 Jat Girl (DOB 04.08.90) 26.8/5'4.5" MCA from P.U. Chandigarh. Employed as Software Developer in MNC Industral Area Chandigarh) Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar. Cont.: 09463330394, 09646712812
- SM4 Jat Girl (DOB 29.02.92) 25.2/5'4" MSc Physics from P.U. Chandigarh. Pursuing B.Ed. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar. Cont.: 09463330394
- SM4 Jat Girl (DOB 10.10.90) 26.6/5'8" B.Com, CA. Doing Job in a private reputed company. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Thalor, Beniwal, Pachar. Cont.: 09915577587
- SM4 Jat Girl (DOB 1990) 5'7" Convent educated, Post graduate, Employed at Chandigarh. Only well educated families with urban background preferably in tricity. Avoid Gotras: Khatkar, Malik. Cont.: 09888626559
- SM4 Jat Girl (DOB 15.8.87) 29.8 B. Tech, MA English. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhanda. Cont.: 09417196763, 09416052747
- SM4 Jat Girl (DOB 15.8.91) 25.8/5'2" B.Com, MBA, B.Ed. final. Employed in a reputed private school, Good land. Father, grandfather etired from Govt. job. Mother lecturer in Govt. School. Avoid Gotras: Malik, Lohan. Cont.: 09416850371, 09416367647
- SM4 Jat Girl (DOB 05.03.91) 26.1/5' BDS from Sirsa. Doing practice in a reputed private Hospital. Avoid Gotras: Nain, Beniwal, Bamel. Cont.: 07206497252
- SM4 Jat Girl 26/5'5" B.D.S. Employed in Parexel Company in I.T. Park Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. Cont.: 09779721521
- SM4 Jat Girl 30/5'2" B.A. Lab. Technician. Own business, Employed as Manager in Multi Coop. Society Bank at Sonepat. Family settled at Sonepat. Avoid Gotras: Saroha, Khatri, Malik. Cont.: 09466944284
- SM4 divorcee (Issueless) Jat Girl (DOB 29.11.86) 30.5/5'3" B. Tech. M. Tech (Computer Science), Employed as P.O. in IDBI Bank. Avoid Gotras: Bhyan, Jaglan, Punia, Duhan. Cont.: 09888553366
- SM4 Jat Girl (DOB 13.08.91) 25.8/5'4" M.S.c I T. from P.U. Chandigarh. All schooling education from Chandigarh. PGT., HTET clear 2016. Father Manager, HTC (Rtd.), Mother Member in Consumer District Forum (Haryana). Avoid Gotras: Malik, Sheokand, Kadian. Cont.: 09878846131
- SM4 (divorcee issuless) Jat Girl (DOB August, 1987) 29.8/5'6" M. Tech. in Computer Engineering. Employed as Assistant Professor in Engineering College, Landra (Pb.). Avoid Gotras: Sangroha, Lohan, Panghal. Cont.: 09464141784, 09780683938
- SM4 Jat Girl 28/5'7" B.Tech.in Electronic & Communication. PG Diploma in wireless networking from Torento (Canada). Father retired from Haryana government, Mother housewife. Avoid Gotras: Gaglan, Savant, Dhull, Dhull. Cont.: 09211218999
- SM4 divorced Jat Girl (DOB 11.05. 87) 29.10/5'4" PhD (Thesis submitted) MBA, UGC, NET, M.A. (Economics). Employed as Assistant Professor in a reputed College under I.P. University Delhi with Rs. 8.5 Lakh package PA. Father Professor, Government Employee. Avoid Gotras: Lohchab., Jaitain, Nandal, March preferred residing in Delhi and from Jat Community only. Cont.: 09416831895, 08447043889
- SM4 Jat Girl (DOB 23.10.87) 29.5/5'5" B. com. MIS, MBA, M.A. Economics 2nd year. Avoid Gotras: Panghal, Baloda, Bhaghajra. Cont.: 09463967847
- SM4 Jat Girl (DOB 23.12.91) 25.3/5'4" B. com. MBA, (HR) Employed as P.O. in ICICI Bank, Pune. Avoid Gotras: Bijarnia, Jakhar. Cont.: 09023093808
- SM4 Jat Girl (DOB 17.07. 92) 24.8/5'4" M.Tech. Computer Science. Employed in MNC Company at Gurgaon. Avoid Gotras: Dhull, Redhu, Sinhmar. Cont.: 09896969566
- SM4 Jat Girl (DOB 31.10.87) 29.5/5'1" B. Tech. CSE, MBA, I.T. HR . Employed in MNC Company at NOIDA with Rs. 7.5 Lakh package P.A. Avoid Gotras: Pannu, Dahiya, Bura. Cont.: 09914678273
- SM4 Jat Girl (DOB19.07.90) 26.8/5'4" M.A. Sanskrit, P.Phil from P.U. Chandigarh. NET quqlified, CTET, HTET cleared, Pursuing PhD from P.U. Chandigarh. Paper clered for Junior Lecturer in Haryana government. Father Government employee. Avoid Gotras: Duhan, Kundu, Sehrawat. Cont.: 09416620245, 09467632314
- SM4 Jat Girl (DOB19.03.89) 28/5'4" M.BBS, Preparing for PG. Avoid Gotras: Mor, Malik, Nain. Cont.: 09465522934
- SM4 Jat Girl (DOB1988) 28/5'2" M.A. (Economics) Hons., Pursuing Ph.D . NET cleared. Employed as Assistant Professor in Chandigarh. Father retired Class-II officer fron Haryana Government. Brother settled in USA.

Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Rana. Cont.: 09988224040

- SM4 Jat Girl (DOB 20.08.86)30.6/5'3" BAMS, MHA. Studying and coaching for IAS in Delhi.Father SDO retired from Haryana Govt. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Girl (DOB 13.07.90) 26.6/5'9" M.A. Economics, B.Lib. Employed as Librarian. Avoid Gotras: Hooda, Malik, Khatri. Cont.: 09417529417
- SM4 Jat Girl (DOB 12.02.91) 25.11/5'3.5" B. Tech. from K.U.K. Avoid Gotras: Dhariwal, Rathi, Grewal. Cont.: 08591364586
- SM4 Jat Girl (DOB 12.08.92) 24.5/5'6" B.A, JBT. Avoid Gotras: Mor, Chahal, Rathee. Cont.: 09416688653, 09467772156
- SM4 Jat Girl (DOB 08.11.89) 27.2/5'3" 10+2, GNM. Employed as Staff Nurse in Civil Hospital Sector 6, Panchkula. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 09463881657
- SM4 Jat Girl (DOB 23. 04. 91) 25.8/5'3" + Chartered Accountant, Employed as Associate Consultant in Infoysis Company, I.T Park Chandigarh with Rs. 7 lakh P.A. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Dahiya, Mann, Hooda, Rathee. Cont.: 09815005193, 9888774788
- SM4 Jat Girl 26/5'2" B.E. Working as Manager in Bank of India in Chandigarh. Father in I.A.F., Mother housewife. One brother. Avoid Gotras: Chauhan, Dhaka. Cont.: 07696566024
- SM4 Jat Girl (DOB 07.12.89) 27/5'6" B.D.S. Working in a reputed Private Dental Hospital. Avoid Gotras: Balyan, Mann. Cont.: 09466367107
- SM4 Jat Girl (DOB 26.07.88) 28.4/5'4" M.A. (Geography) B.Ed, M.Tech, (Geoinformatic). Employed as Project Assistant (Adhoc) in Science & Tech. Deptt. Panchkula. Father in Central Govt. job. Avoid Gotras: Dalal, Dahiya, Panwar. Cont.: 09416534644
- SM4 Jat Girl (DOB 19.02.89) 27.10/5'2" M.A. M.Phil, Pursuing Ph.D (Sociology) from P.U. Chandigarh, UGC, NET qualified Working as Lecturer in Post Graduate Govt. College for Girls, Sector 42, Chandigarh from last three years. Martch preferred Chandigarh, Panchkula, Mohali. Avoid Gotras: Narwal, Pannu, Ahlawat. Cont.: 09416862660, 09729577161
- SM4 Jat Girl (DOB Sep.1991) 25.2/5'4" M.A. Psychology from P.U. Chandigarh. HTET cleared. Employed as Assistant Professor on contract basis. Avoid Gotras: Khokhar, Malik, Mor. Cont.: 09876221778
- SM4 Jat Girl (DOB 07.08.83) 33.4/5'5" M.A. (Eng.). MBA, B.Ed. Working in HR NOIDA. Grand Daughter of Sir Chhotu Ram. Avoid Gotras: Ohlian, Bajad, Dagar, (Ahlawat not direct). Cont.: 09896399003
- SM4 Jat Girl (DOB 04.11.90) 26/5'2" B.A. B.Ed. from Chandigarh. Father Govt. Officer in HSIDC. Avoid Gotras: Hooda, Kundu, Bhanwala. Cont.: 09729235545
- SM4 Jat Girl (DOB 26.01.88) 28.11/5'3" M.Tech Employed as Guest Lecturer in Govt. Polytechnic College Nilokheri. Avoid Gotras: Malik, Siwach, Goyat. Cont.: 09215017770
- SM4 Jat Girl (DOB 17.02.90) 26.10/5'3" M.Tech Employed as Programmer in Food & Supply Department Karnal. Avoid Gotras: Malik, Siwach, Goyat. Cont.: 09215017770
- SM4 Jat Girl (DOB 18.10.84) 32.2/5'3" M.Com. Passed Computer Course. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Khatri. Cont.: 09468089442
- SM4 Jat Girl 23/5'3" M.B.A. Employed in MNC at Mumbai with Rs. 4.50 lakh package P.A. Father, Mother in Govt. Job. Avoid Gotras: Mor, Nain, Gill. Cont.: 09872330397, 09915711451
- SM4 Jat Girl (DOB 18.08.88) 28.4/5'3.6" M.Sc. Math, B.Ed. Working in a reputed private School. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 09354839881
- SM4 Jat Girl 27.5/5'7" BA (Hons), M.A. (Eng.) M.Phil, B.Ed. NET quqlified. Employed as JBT Teacher in UT Chandigarh. Avoid Gotras: Malhan, Kadian, Chahar. Cont.: 09467394303
- SM4 Jat Girl (DOB 05.09.91) 25.3/5'6" M.Tech (CSE) Employed in a University. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana. Cont.: 07696844991
- SM4 Jat Girl (DOB 20.09.91) 25.3/5'6" M.Tech (CSE). Avoid Gotras: Panwar, Deswal, Ahlawat. Cont.: 08053825053, 09813262849
- SM4 Jat Girl 25/5'2" B.Tech (CSE) Cleared SSC Exam. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Joon. Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl (DOB 07.02.90) 26.10/5'10" B.Tech (ESE) M.Tech (ESE) from MDU Rohtak. GATE qualified. Avoid Gotras: Kadian, Rathee, Sangwan. Cont.: 08447796371
- SM4 Jat Girl (DOB 05.12.86) 30/5'5" M.Sc. Geology Employed as Class-I Gazzeted Officer at G.S.I. Govt. of India at Dehradun. Fathr School Lecturer, Mother Housewife. Avoid Gotras: Kundu, Rathee, Malik. Cont.: 08950092430
- SM4 widow issue-less Jat Girl (DOB 02.10.80) 36.2/5'3" M.Sc., M.Phil, B.Ed., Employed as Junior Lecturer in Haryana Government. Avoid Gotras: Nandal, Sehrawat, Dalal. Cont.: 08570032764

Wanted Brides

- SM4 Jat Boy slim tall 6'1" Aug. 88 B.Tech IT, MBA (F) wkg MNC. Father retd. Central Govt. Ofcr., mother house wife, resi. DLF Phse-2, GGN. Avoid : Rathi, Joon. Contact : 9717864422
- SM4 Rohtak based Jat Boy 28, 5'9" BE (Mech.) 3.8 L. Avoid : Hooda, Chahal, Beniwal. Contact : 9901850202
- SM4 Jat Boy 30, 5'10" MBA Finance, CFA B.Tech working in MNC Bombay. Good packing only some family settled in Panchkula. Avoid : or, Gahlawat, Rathi. Contact : 08360609162
- SM for Malik Jat Boy 28/6'1" BDS, MDS own Clinic in Rohini Delhi. Contact : 9212001648
- जाट 30 वर्ष 5′8′′ सरकारी शिक्षक प्राथमिक विद्यालय हेतु सुंदर संस्कारी वधू चाहिये शिक्षा को वरीयता। संपर्क : 9719056709, 9639078638
- SM4 B.Tech PGDM handsome Jat boy 86 born, 5'11". Working in GGN MNC drawing Rs. 6.5 lacs. Faridabad based family well settled and educated family originally from Distt Sirsa. Pref. for working girl of similar background. Avoid : Rao, Lather, Dhaka, Tomar. Contact : 9350208278
- SM4 h'some Jat boy, 29/5'9", B.Tech, MBA (UK), Mkt Mgr. 60 lacs PA, highly rep. & edu. Fmly. Avoid : Tomar, Poriya. Contact : 9412834119
- SM4 smart well settled B.Tech. S/w Egr/28/5'9"/ 16 LPA wrkg in MNC GGN. Seeks B'ful Edu. & wrkg. Girl. Avoid : Malik, Gulia. Contact : 8816943511
- SM4 MBA-IIM, CA & B.Com SRCC boy 28/5'10" CTC 21 L+ Delhi based family, father & brother CA. Avoid : Lakra, Ahlawat. Contact : 9971380593
- SM4 Jat Boy 30/5'10" MBA wkg MNC, CTC 14 Lpa. S. Delhi bsd pref B.Tech/MBA/Lecturer from Edu & Rep fmly. Avoid : Panwar, Kadyan, Dalal. Contact : 9810280462
- SM4 for Jat boy, 37 yrs. 6 ft, B.Tech, MBA (IMT/FDU USA) doing family business based at Panchkula. Avoid : Lamba, Sheoran, Sangwan. Contact : 988414515
- SM4 Jat 85/6' MD (Medicine) boy seeks Jat Medico Girl Preff Purshing PG. Avoid : Balyan, Dagar. Contact : 9414936906
- SM4 Legally divorce boy 29/5'8" B. Pharma, MBA, working in reputed Pharma Company, package 5 Lacs per Annum. Avoid : Phalswal, Jhuthra, Mehlawat. Contact : 9466392155
- SM4 Jat Boy 30/5'10" MBA (finance) from France. CFA, B.Tech (PEC). DHA level three cleared. Employed in MNC at Mumbai with good package. Family settled at Panchkula. Only son. Avoid Gotras: Mor, Gehlawat, Rathee. Cont.: 08360609162
- SM4 Jat Boy (DOB13.08.89) 31.7/6'1" MA, Mass Communications from London. Working in MNC Gurgaon with 12,5 lakh package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM4 Jat Boy (DOB Sep. 1985) 27.8/5'10" B. Tech. M. Tech from Canada. Doing Job in Canada. PR status. Avoid Gotras: Sarao, Basiana, Ojaula. Cont.: 08288853030
- SM4 Jat Boy (DOB 30.08.84) 32.8/6'4" B. Tech. Electronics & communications. Employed as Assistant Manager in Nationalized Bank. Parents retired Government officers. Avoid Gotras: Ahlawat, Malik, Sangwan. Cont.: 09417496903
- SM4 Jat Boy (DOB 30.09.89) 27.6/5'10" B. Tech. Computer Engineering. Two flats and one showroom in Gurgaon. Fathr retired Principal. Avoid Gotras: Sheokand, Malik, Punia. Cont.: 09871044862
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.85) 31.4/5'11" MBBS, M.S. from PGI Rohtak. Posted at Bhalot (Rohtak) as regular Medical Officer. Avoid Gotras: Dhankhar, Beniwal, Rathee. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Boy 26.10/5'11" BDS, MDS. Father S.D.O. retired from Haryana Government. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09915577587

किसान आत्महत्या का सैलाब कब थमेगा?

– डॉ. ज्ञान प्रकाश पिलानिया (पूर्व सांसद)

यह शर्मनाक भी है और घोर चिंताजनक भी है कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश में किसानों की अनवरत आत्महत्याओं का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। ज्ञातव्य है कि इस संदर्भ में, गैर सरकारी संगठन 'सिटीजंस रिसोर्सेज एंड एक्शन एंड इनीशिएटिव (क्रांटि)' ने सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका के द्वारा किसानों की आत्महत्याओं की घटनाओं और किसानों की समस्याओं से जुड़े अनेक मुद्दे उठाए। इसका संज्ञान लेते हुए, 27 जनवरी, 2017 को सुप्रीम कोर्ट ने किसानों की आत्महत्या के बढ़ते मामलों पर एक बड़ा आदेश दिया। कोर्ट ने केंद्र सरकार, राज्य सरकार, संघ शासित प्रदेश और आरबीआई को किसानों की खुदकुशी की वजह जानने के निर्देश दिए हैं। इन आत्महत्याओं के पीछे क्या कारण है, इसे पता लगाने के लिए मुख्य न्यायाधीश जे.एस. खेहर और जस्टिस एन.वी. रमन की बैंच ने चार हफ्तों के अंदर जवाब मांगा है।

याचिका पर सुनवाई के दौरान उच्चतम न्यायालय ने टिप्पणी की कि यह देशभर के किसानों से जुड़ा व्यापक जनहित का संवेदनशील मामला है। सुप्रीम कोर्ट ने पूछा है कि फसलों की बर्बादी, कर्ज और प्राकृतिक आपदा से किसानों की रक्षा करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारें एक समग्र नीति क्यों नहीं ला रही हैं, जबकि किसान फसलों की बर्बादी और कर्ज से परेशान होकर आत्महत्या कर रहे हैं। इस एनजीओ ने पहले गुजरात हाईकोर्ट में अर्जी लगाई थी, जिसे यह कहते हुए खारिज कर दिया गया था कि वो नीतिगत मामलों में दखल नहीं दे सकता। इसके बाद 'क्रांटि' ने सुप्रीम कोर्ट का रूख किया। अब सुप्रीम कोर्ट ने इसका दायरा बढ़ाकर पूरे देश के किसानों के लिए कर दिया है। वास्तव में यह शर्मनाक है कि देश में अन्नदाता किसान कर्ज और कम पैदावार के कारण लगातार आत्महत्या कर रहे हैं।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, किसानों में आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ी है। साल 2014 में 5650 किसानों ने मौत को गले लगाया, जबकि ताजा आंकड़ों में यह संख्या बढ़कर 8007 हो गई है। जोकि सन् 2014 में किसानों द्वारा की गई आत्महत्याओं से 42 प्रतिशत अधिक है। कुल 8007 आत्महत्याओं में से 6431 आत्महत्याएं 7 राज्यों यथा महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु में हुई हैं। इन मौतों में करीब 87.5 फीसदी केवल देश के इन साल राज्यों में हुई हैं। आत्महत्या के मामले में सबसे ज्यादा खराब स्थिति महाराष्ट्र की रही है। राज्य में वर्ष 2015 में 4291 किसानों ने आत्महत्या की थी। महाराष्ट्र के बाद किसानों की आत्महत्या के सर्वाधिक मामले कर्नाटक 1569, तेलंगाना 1400, मध्य प्रदेश 1290, छत्तीसगढ़ 954, आंध्र प्रदेश 916 और तमिलनाडु 606 में पाए गए। हमारे देश में औसतन हर 41 मिनट में कहीं न कहीं एक किसान आत्महत्या करता है। 2015 में सबसे ज्यादा किसान आत्महत्या के मामले महाराष्ट्र में हुए। सन् 1995 से गणना करें तो हम पाते हैं कि अब तक करीब 3.18 लाख से ज्यादा किसान आत्महत्या कर चुके हैं।

यह भयावह है कि फसल के बर्बाद होने, कृषि क्षेत्र की अव्यवस्थाओं या कर्ज के भार के कारण, किसानों की आत्महत्या का सिलसिला बदस्तूर जारी है। वर्ष 2016 के शुरूआती चार महीनों में ही गत वर्ष के मुकाबले 40 फीसदी अधिक किसानों ने खुदकुशी की है। महाराष्ट्र में 18 फीसदी अधिक मामले दर्ज किए गए हैं, जबकि कर्नाटक में चार गुना से अधिक की बढ़ोतरी हुई है। महाराष्ट्र, तेलंगाना, कर्नाटक लगातार शीर्ष राज्यों में बने हुए हैं। तालिबान ने 2014 में 3477 लोगों की हत्या की थी, हमारे यहां 3228 किसानों ने आत्महत्या कर ली। क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार, 2014 में खुदकुशी करने वाले लोगों में 4.3 फीसदी किसान थे। 2014 में तेलंगाना में 898 किसानों ने जान दी थी। 2015 में 1350 किसानों ने खुदकुशी की। 66 फीसदी खुदकुशी करने वाले किसानों की उम्र 30 से 60 वर्ष थी। कर्नाटक में, 1300 किसानों ने खुदकुशी की 2015 में। 321 किसानों ने आत्महत्या की थी 2014 में। 2014 में मध्य प्रदेश के 826 किसानों ने जान दी थी। 443 किसानों ने आत्महत्या की छत्तीसगढ़ में 2014 में। ऐसा लगता है कि बेबस किसानों के पास खुदकुशी के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता।

यह किसान के भाग्य की विडंबना है कि कभी सूखे से, कभी बाढ़ से, कभी कीटों से, फसल बर्बाद हो जाती है। पिछले दो सालों में देश के कई राज्यों में जबरदस्त सूखा रहा, जिससे किसानों को बड़ी मुश्किलें झेलनी पड़ी। राज्य में सूखे की गंभीरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि महाराष्ट्र के लातूर शहर में पीने के पानी की किल्लत की वजह से दंगे की स्थिति को देखते हुए धारा 144 लगानी पड़ी थी। यूनिसेफ की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, बीते साल देश की एक चौथाई आबादी सूखे से प्रभावित रही, जिससे 10 राज्यों के, 254 जिलों के, 256 हजार गांवों के, 33 करोड़ लोग प्रभावित हुए। 4 राज्यों, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में हालात सबसे भयावह रहे। बीते 10 साल में कम से कम 7 बार 85 प्रतिशत सूखाग्रस्त जिले इससे पीड़ित रहे हैं।

किसानों की आत्महत्या के प्रमुख कारणों में एक बड़ी वजह कर्ज का बोझ और दिवालियापन है। किसान आर्थिक संकट से उबर नहीं पा रहे हैं। किवदंति है कि किसान, कर्ज में ही पैदा होता है, कर्ज में ही जीता है और कर्ज में ही मरता है। फसल बोने के लिए कर्ज, कोढ़ में खाज का काम करता है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण द्वारा वर्ष 2013 में किये गये स्थिति आंकलन सर्वेक्षण (एसएएस) के अनुसार जिस दिन किसान परिवारों पर कर्ज के आंकड़े लिये गए थे, उस दिन प्रत्येक किसान परिवार पर औसतन लगभग 47000 रूपये कर्ज होने का अनुमान लगाया गया है। इस ऋण में संस्थागत संस्थानों तथा सेठ–साहूकारों से लिये गए कर्ज भी शामिल हैं।

सर्वेक्षण के दौरान ग्रामीण क्षेत्र के लगभग 52 प्रतिशत किसान परिवारों के कर्ज के बोझ में दबे होने का अनुमान लगाया। कम जोत के किसान परिवार पर कम कर्ज का भार है जबकि बड़े

किसान परिवारों पर अधिक कर्ज है। कम जमीन वाले किसानों पर 41.9 प्रतिशत कर्ज हैं जबकि दस हैक्टेयर से अधिक जमीन वाले 78. 7 प्रतिशत किसान परिवार कर्जदार हैं। एक हैक्टेयर से कम जमीन वाले किसान परिवार पर औसतन 31100 रूपये का ऋण है जबकि दस हैक्टेयर से अधिक जमीन जोतने वाले किसान परिवार लगभग 290300 रूपये के कर्जदार हैं। आत्महत्या करने वाले किसानों में करीब 80 फीसदी बैंक कर्ज के बोझ से दबे थे न कि महाजनों से। गैर संस्थागत संस्थानों या सेठ–साहूकारों ने 25.8 प्रतिशत कर्ज किसानों को दिया है। महाराष्ट्र में औसत कर्ज 54,700 रूपये प्रति किसान परिवार है।

खेती की बढ़ती लागत, कृषि उत्पादनों के लिए लाभकारी बाजार का अभाव, मौसम की प्रतिकूलता, समेत कई ऐसे कारण हैं, जिनके चलते किसान कर्जों में डूब जाते हैं। इन्हीं चौतरफा दबाव में नितांत अकेला पड़कर किसान ऐसे भंवर में फंस जाता है, जहां से निकल पानें की उसे कोई राह नहीं सूझती। ऐसे हालात में बहुतेरे किसान टूट जाते हैं और आत्महत्या करने का रास्ता अख्तियार कर लेते हैं।

किसान के लिए सबसे बड़ी समस्या है कि उसे अपनी उपज का लाभकारी मूल्य नहीं मिल रहा है। उसकी खेती के उत्पाद की कीमत सरकार या बाजार या बिचौलिए (दलाल, आढ़तिये) तय करते हैं। चप्पल बनाने वाला चप्पलों की कीमत खुद तय करता है। अपनी किताब छापने वाला प्रकाशन किताब की कीमत खुद तय करता है। खाना बनाने वाला, खाने की कीमत खुद तय करता है। सिर्फ किसान एकमात्र ऐसा पेशेवर है जिसकी फसल की कीमत दूसरे तय करते हैं। यह ज्ञातव्य है कि सरकार ने वादा किया था कि किसानों को 'स्वामीनाथन कमीशन' की अनुशंषा के अनुसार कुल लागत मूल्य से 50 फीसदी अधिक दिया जाएगा लेकिन सुप्रीम कोर्ट में ही सरकार ने यूटर्न लेते हुए हलफनामा दिया कि यह संभव नहीं है।

आज, किसान के बेटे का खेती से मोह भंग हो गया है। खेती घाटे का धंधा हो गई है। वर्ष 2013 में किए गये सर्वेक्षण (एसएएस) में देश में नौ करोड़ दो लाख किसान परिवार होने का अनुमान लगाया गया है। 199 में यह संख्या 11 करोड़ थी। 2001 में घटकर 10.3 करोड़ और 2011 की जनगणना में 9.58 करोड़ रह गई। सवाल है कि जिस तेजी से सरकारी कर्मचारियों, स्कूलों–कॉलेजों के शिक्षकों आदि के वेतन वृद्धि हुई उस तुलना में किसान की उपज का मूल्य कितना बढ़ा। यह एक त्रासदी है कि कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाले देश में कृषि उत्पाद के न्यूनतम मूल्य, उत्पाद खरीदी, बिचौलिए की भूमिका, किसान को भंडारण का हक, फसल–प्रबंधन जैसे मुद्दे, गौण दिखते हैं और यह हमारे लोकतंत्र के किसान के प्रति संवेदनहीनता का प्रमाण है। यदि किसानों की आत्महत्याओं के सैलाब को रोकना है तो ये सूरत बदलनी चाहिए। ऐसे में कृषि आर्थिकी और ग्रामीण सामाजिकता की जटिलताओं के साथ उनकी विडंबनाओं पर बहुत ईमानदारी के साथ, पारदर्शी ढंग से सोचने और कार्ययोजनाएं बनाने की जरूरत है, ताकि आत्महत्याओं को रोका जा सके।

2015 में आठ हजार किसानों ने की आत्महत्या

सरकार ने देश में किसानों को खेतिहर मजदूरों द्वारा आत्महत्या किए जाने की बढ़ती घटनाओं को गंभीरता से लेते हुए इसके मूल कारणों का पता लगाने और उसका निराकरण करने के लिए व्यापक अध्ययन शुरू कराया है।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के अनुसार देश में साल 2015 में आठ हजार किसानों और 12 हजार खेतिहर मजदूरों ने आत्महत्या की। रिपोर्ट में इन आत्महत्याओं के पीछे कर्ज और दिवालियापन को मुख्य वजह बताया गया है। हालांकि सरकार नए सिरे से इन कारणों का अध्ययन कराना चाहती है ताकि इन्हें दूर करने के उपाय तलाशे जा सकें।

एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार साल 2015 कर्ज न चुका पाने के कारण कुल 2978 किसानों ने आत्महत्या की जबकि खेती बाड़ी से जुड़ी अन्य समस्याओं के कारण अपनी जान देने वालों की संख्या 1494 थी। महिला किसानों में कर्ज के साथ ही घरेलू विवाद भी आत्महत्या की मुख्य वजह पाया गया। महिला और पुरुष किसानों को मिलाकर आत्महत्या करने वाले ऐसे लोगों की कुल संख्या 12602 रही जोकि देश में आत्महत्या के कुल मामलों का 9.4 प्रतिशत था। साल 2015 में देश में आत्महत्या के कुल एक लाख 33 हजार 623 मामले सामने आए थे। यह आंकड़े यह बताते हैं कि साल 2014 की तुलना में साल 2015 में किसानों द्वारा आत्महत्या की घटनाओं में तीन फीसद की बढ़ोतरी हुई।

रिपोर्ट के अनुसार 2015 में किसानों द्वारा आत्महत्या करने की सबसे ज्यादा घटनाएं महाराष्ट्र, तेलंगाना और कर्नाटक में हुई। इस मामले में महाराष्ट्र का रिकार्ड सबसे खराब रहा। राज्य में इस दौरान 3030 किसानों ने आत्महत्या की। हालांकि इस अवधि में बिहार, गोवा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, झारखंड, मिजोरम, नगालैंड, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल और केंद्र शासित प्रदेशों में ऐसी एक भी घटना नहीं हुई।

खेती देश में जीविकोपार्जन का सबसे प्रमुख जरिया है। देश की 55 फीसद आबादी आजीविका के लिए इस पर ही निर्भर है। कुल श्रम बल का आधा हिस्सा खेती बाड़ी में लगा हुआ है लेकिन इसके बावजूद देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान महज 14 प्रतिशत है। यह आंकड़े कृषि क्षेत्र और उसमें लगे लोगों की दयनीय हालत बयां कर रहे हैं।

एनसीआरबी के अनुसार मानसून पर अत्याधिक निर्भरता, अपर्याप्त सिंचाई व्यवस्था, छोटे हिस्सों में बंटे खेत तथा कर्ज और फसल बीमे की समुचित व्यवस्था का अभाव कृषि क्षेत्र की बदहाली की वजह बन रहा है।

(राष्ट्रीय सहारा से साभार)

खेती किसानी और विदेशी निवेश

– डा0 भूप सिंह, भिवानी

W.T.O. ने जो कृषि पर समझौता तैयार किया है उसके अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कम्पनी कारगिल का दिमाग है।

बहुराष्ट्रीय देशी–विदेषी औद्वोगिक या कारोबारी घरानों व समूहों का सपना है – किसानों के द्वारा खेती के स्थान पर कारपोरेट फार्मिंग हो। आखिर अमेरिका में यहीं तो हुआ 1938 में वहाँ 38 लाख फैमिली फार्म थे। 1989 में 21 लाख रह गये और 2000 में 1.10 लाख रह गये। आज अमेरिका में 60 प्रतिशत अनाज 35000 बड़े फार्म पैदा कर रहे हैं। जो कारपोरेट घरानों के कब्जे में हैं। यह कारण है कि W.T.O. जहाँ दूसरे भारत जैसे विकासशील देशों पर कृषि सब्सिडी घटाने पर दबाब डाल रहा है और सरकारें डब्लू0टी0ओ0 वर्ल्ड बैंक, आई.एम.एफ. जैसी व्यापारी व वित्तीय संस्थाओं के दबाब में सब्सिडी घटा भी रही है वहीं कारपोरेट हाउस सरकार की बाँह मरोड़ कर मनचाही सब्सिडी ले रहे हैं और इसी सब्सिडी के बूते W.T.O. के माध्यम से दुनिया के खाद्यान्न बाजार को हथिया रहे हैं।

मौसैन्टों, सिंजेंटा और नोवामिसे जैसी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां जी.एम. बीजों के माध्यम से खेती किसानी को उजाड़ कर जिन्स बाजार को काबू करना चाहती हैं। कान्ट्रैक्ट फार्मिंग के माध्यम से मण्डी कानूनों में परिवर्तन करके किसानों को नकदी फसलों के जाल में फसा कर हमारी खाद्य सुरक्षा को संकट में डाल कर बाजार को हथियाना है।

सरकारें भूमि हदबन्दी कानूनों में ढील देकर और कम्पनियों व उद्योगों के लिए भूमि अधिग्रहण करके किसानों को खेती से बेदखल करने की मुहिम चला रही है। यहाँ पर नीति आयोग के उपाध्यक्ष अरविन्द पनगडिया की योजना तो स्पष्ट ही कर देती है कि सरकार किस दिशा में कार्य कर रही है। पनगडिया का कहना है – यदि भूमि अधिग्रहण नहीं किया जायेगा तो उद्योगों के लिए सस्ते मजदूर कहाँ से आयेंगे ? अर्थशास्त्रीयों की परिभाषा कि देश के विकास के लिए खेती किसानी घटना आवश्यक है, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की मनसा के अनुसार है।

देश में बुलेट ट्रेन, स्मार्ट सिटीज, बैंक खाते, मोबाईल, औद्योगिक हब, 6–8 लेन सड़के ये सब विकास के लक्षण हैं। शिक्षा स्वास्थ्य – सुरक्षा भी निजी प्रबन्ध में जाना यह भी विकास की परिभाषा है।

बीज उर्वरक, कीटनाशी, कृषि उपकरण आदि सभी कारपोरेट घराने बना रहे हैं और अपनी तय कीमतों पर किसानों को बेच रहें हैं। W.T.O., W.B., IMF के दबाब में किसानों को दी जा रही सब्सिडी को खत्म करना ये सब खेती किसानी को खत्म करने के कदम हैं। बाहर की सस्ती सब्सिडी युक्त और जेनेटिक इन्जिनियरिंग से संशोधित – सवंद्वित कृषि जिन्सों और उनसे तैयार ढ़ेर सारी वस्तुएं भारी मात्रा में हमारे यहाँ डम्प की जा रही हैं। जिससे हमारे किसान अपने उत्पाद का उचित मूल्य नहीं ले सकते। कारपोरेट घराने, उनके कारिंदे, सत्ताधरी, नौकरशाह, सुविधाभोगी विशिष्ट अभिजन, दलाल व सट्अेबाज एक तरफ रंगरेलियां मनाने में मशगूल हैं वही किसान आत्महत्या को मजबूर है।

कारपोरेट/कान्ट्रैक्ट फार्मिंग की बहुराष्ट्रीय व्यवस्था का रास्ता साफ हो जाए इसके लिए ऐसे हालात पैदा किए जा रहें हैं कि किसान खुद व खुद मजबूर होकर खेती–बाड़ी छोड़ दें। खेती के उत्पाद सस्ते, खेती में लगने वाले निवेश महंगे, सब्सिडी में कटौती, ठेके की खेती को बढ़ावा देना, लैण्ड सीलिंग खत्म करना, पेटेण्ट व मंड़ी कानूनों में बदलाव, कृषि उत्पादों के विदेशी आयातों से मात्रात्मक प्रतिबन्धों का खात्मा, खाद्य पदाथों का औद्योगिक प्रसंस्करण आदि ऐसे कदम हैं जो छोटे–छोटे किसानों को खेती से स्वतः बेदखल कर देंगे। इन सबके वाबजूद हमारा देश कृषि प्रधान देश है और खेती किसानी की चिंता करते हैं। फिर सरकार, पहले वाली कांग्रेस व मौजूदा बीजेपी क्यों खेती किसानी को महत्व न देकर उद्योगों व विदेशी निवेश को बढ़ावा दे रही है? वास्तव में ठीक व गलत विचार तो करना ही पड़ेगा नही तो गम्भीर परिणाम भुगतने से कोई नहीं बचा सकेगा। ठीक निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए कुछ मूलभूत बातों पर विचार करना अनिवार्य हैं।

पहली बात र्निविवाद है कि खेती किसानी का उत्पाद अन्न, सब्जी, फल, दूध सभी औद्योगिक उत्पादों से महत्वपूर्ण है। इन उत्पादों का महत्त्व व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि खेतीबाड़ी दूसरे उद्योगों से कम निवेश में हो सकती हैं। तीसरी विशेषता यह है कि खेती किसानी दूसरे उद्योगों की तरह प्यार्वरण को नुकसान नहीं पहुंचाती।

चौथी आवश्यक बात यह है कि खेती किसानी के लिए हमें किसी दूसरे देश का मोहताज नहीं होना पड़ता।

हमें खेती किसानी के तरीके दूसरों से सीखने की आवश्यकता नहीं हैं।

पांचवी बात यह है कि हमारे पास खेती किसानी के लिए प्यार्प्त मात्रा में श्रम मौजूद है।

छठी महत्वपूर्ण व सौभाग्य की बात यह है कि दुनियाँ में हमारे पास खेती–किसानी के लिए सबसे उत्तम भूमि व जलवायु है। जब भूमि और जलवायु की बात आती है तो मैं किसी भी अर्थशास्त्री या वैज्ञानिक की परवाह किये बगैर यह निष्कर्ष देते देर नहीं करता कि यदि हमारी जैसी भूमि व जलवायु जापान, जर्मनी, फ्रांस, इटली, इजरायल जैसे देशों के पास होती तो वे किसी प्रकार के उद्योग धंधे की परवाह किये बगैर अकेली खेती–किसानी के बूते दुनिया के सिर–मौर हो सकते थे। सातवीं बात यह है कि खेती–किसानी, (कारपोरेट खेती नहीं) समाज में आसमान छूती गैर बराबरी पैदा नहीं करती और आठवीं महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी भी उद्योग के मुकाबले खेती सबसे अधिक रोजगार देती है।

अब दूसरे पक्ष को भी देखने की आवश्यकता है हमारे प्रधानमंत्री विदेशी निवेश लाकर उद्योग धंधों को बढ़ावा देने का भारी प्रयास कर रहे हैं। मिडिया, अर्थशास्त्री, पार्टी के लोग सराहना करने की होड़ लगा रहे हैं। आओ इस मुहिम को ठोस आधार पर जांचे। मान लो प्रधानमंत्री प्रत्येक महीने दो देशों में जाकर निवेश लाने में सफल रहते हैं। एक योजना मोदी जी को और दे दी जाये तो इस हिसाब से 10 वर्षों में प्रधानमंत्री 200 देशों से निवेश ले आते हैं।

मान लें प्रत्येक देश की पांच कंपनियां हमारे देश में निवेश करने पर राजी हो जाती हो और प्रत्येक 5000 लोगों को रोजगार देती हैं तो इस प्रकार 50 लाख लोगों को 10 वर्ष में रोजगार मिल सकेगा। यह आदर्श व वैचारिक स्तर की गणना है। यदि व्यवहारिक बात करें तो इस समय सभी उद्योग मिलजुल कर कुल रोजगार में लगे लोगों का केवल 10 प्रतिशत रोजगार दे रहे हैं। यह संख्या 10–12 लाख से अधिक नहीं है। वर्तमान में छोटी बड़ी 6000 कंपनियां कार्य कर रही हैं। यह भी सिद्धांत की बात है कि ज्यों–ज्यों तकनीक उन्नति करेंगी रोजगार कम होता चला जायेगा। फिर मोदी जी द्वारा लाया गया निवेश कितना रोजगार दे पायेगा यह विचारणिए बात है। जितना निवेश आयेगा उसके बदले जितना पैसा लाभ व रायल्टी के रूप में बाहर जायेगा उस पैसे में निश्चित तौर पर निवेश से मिले रोजगार से कई गुणा रोजगार मिल सकता है। इस संदर्भ में मेरी गणना को छोड़कर कुछ अन्य संबंधित व्यक्तियों की राय पर भी ध्यान देना आवश्यक है। एक आंकलन के अनुसार 1983–2000 के बीच दुनियां की 200 बड़ी कंपनियों का मुनाफा 362.4 प्रतिशत बढ़ा। जबकि कर्मचारियों की संख्या केवल 14.4 प्रतिशत बढ़ी। वर्तमान में तकनीकी उन्नति होने के कारण रोजगार 14 प्रतिशत से नीचे रहेगा, ऊपर नहीं। बिजनेस पत्रिका के अनुसार "बढ़ती कारपोरेट ताकत के व्यापक आर्थिक परिणाम हैं, हालांकि सबसे बड़ा प्रभाव राजनैतिक है क्योंकि कारपोरेशन अपनी आर्थिक गोलबंदी को राजनैतिक ताकत में तब्दील कर लेते हैं।"

ट्रासनेशनल इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट कहती है "बड़ा सवाल यह है कि सरकारों को इस बात को मानने की क्या आवश्यकता है कि डब्लू.टी.ओ. यह तय करे कि वे अपने लोगों को भोजन का अधिकार दे सकते हैं। भोजन के अधिकार को व्यापारिक नियमों में नहीं बांधा जा सकता। सेंटर फॉर इकॉनामिक पालिसी रिसर्च के अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम के निदेशक डे बोराह जेम्ज का कहना है– डब्लू.टी.ओ. के नियम लिखे जाने के बाद विश्व बहु–आयामी खाद्य संकटों से गुजर रहा है। उनका आगे कहना है कि यह शर्मनाक से भी बहुत ज्यादा है कि अमेरिका ने 2013 में पूरे साल इन वार्ताओं को उलझाए रखा और अंत में भारत एवं अन्य विकासशील देशों को सांत्वना पुरूस्कार के रूप में 'पीस क्लाज' थमा दी गई। अमेरिकी वाणिज्य विभाग के ताजा आंकड़ों के अनुसार 2013 में जहां भत्तों में गिरावट आ रही थी कारपोरेट मुनाफा 85 साल में अपने उच्चतम स्तर पर था। आई.एम. एफ. के प्रबंधक के निदेशक लगार्द ने कहा है कि इस पैसे का इस्तेमाल आर्थिक विस्तार में नहीं हो रहा है। ज्यादातर कंपनियां क्षमता और रोजगार सृजन की बजाए अपने में ही निवेश कर रही हैं। ये कुछ बातें हैं जो विदेशी निवेश को बुलाकर देश की आर्थिक व रोजगार से जुड़ी समस्याओं को हल करने की श्री नरेंद्र मोदी जी की मुहीम से संबंध रखती है। अब मोदी जी व उनकी टीम को कृषि से जुड़ी योजना पर विचार कर लें। नीति आयोग के उपाध्यक्ष अरविंद पनगढ़िया का विचार है कि किसान खेती छोड़कर उद्योगों में मजदूरी करें। मोदी जी ने सत्ता में आते ही राज्य सरकारों द्वारा अनाज की सरकारी खरीद पर 100–125 रू. प्रति क्विंटल का बोनस दिया जाता था, उसे बंद कर दिया। कर्मचारियों को तोहफा देते हुए गांधी जी अनुसार कुटीर उद्योगों व खादी को बढ़ावा देने के लिए 1956 में बने खादी और ग्रामोद्योग आयोग (के.वी.आई.सी.) को भंग कर दिया जबकि यह उद्योग 170–200 अरब का रहा है और उसमें सवा करोड़ लोगों को रोजगार मिला हुआ था। सारी दुनियां की कंपनियां यहां उद्योग लगाती हैं तो वैचारिक गणना के आधार पर भी अधिकतम 50 लाख लोगों को मजदूरी मिलती है जबकि खेती–किसानी 90 करोड़ लोगों को जीवन यापन का आधार देती है। 50 लाख रोजगार के लिए 90 करोड़ के रोजगार की परवाह न करना यह अर्थशास्त्र और देशभक्ति मोदी जी की सूक्ष्म बुद्धि ही समझ सकती है। यह हमारी मोटी बुद्धि से तो बाहर की बात है।

देश की मजबूती के लिए मोदी जी की चिंता पर भी विचार कर लेना अनिवार्य है। उद्योग व उद्योगपति मजबूत होने पर देश मजबूत होगा, किसान मजदूर से नहीं। पर हाल में सरकारी मीडिया द्वारा ही उजागर हुआ है कि केवल 50 डिफाल्टरों के कारण बैंकों का 1210 अरब रूपये डूब गए। 5 अरब से ज्यादा राशि के डिफाल्टरों के नाम माननीय सुप्रीम कोर्ट ने मांगे हैं। 3 हजार अरब रूपये से ज्यादा पैसा विदेशी बैंकों में पड़ा है। मैं मोदी जी से शर्त लगा सकता हूं कि अरबों रूपये का डिफाल्टर, अरबों रूपये विदेश भेजने वाला किसान व मजदूर नहीं हो सकता, वे तो देश को मजबूत करने वाले उद्योगपति ही हो सकते हैं। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि मोदी जी की सीमा पर व देश के अंदर देश की सुरक्षा में हथियार उठाने वाले किसान मजदूर के बेटे बेटियां हैं न की किसी उद्योगपति या नौकरशाह की। वास्तविकता यह है कि दबाव पड़ने पर उद्योगपति तो बड़े आराम के साथ देश छोड़कर विदेश में रह लेते हैं। अब देशभक्ति के कौन नजदीक है ये तो मोदी जी ही जानें। विकल्प क्या हो सकता है, सबसे पहले तो यह आवश्यक है कि किसान को उसके उत्पाद का उचित मूल्य मिले जिससे वह जिंदा रह सके और इस धंधे को आगे बढ़ा सके। प्रश्न है पैसा कहां से आए। देश में पैसा बहुत है जैसे सरकार की आज की वार्षिक अनाज खरीद लगभग 7 करोड़ टन है यदि वर्तमान गेहूं–चावल की सरकारी खरीद रेट को दुगुना कर दें तो लगभग 1000 अरब रूपये की आवश्यकता होगी। यह रकम उद्योग को दी जाने वाली छूट का मात्र छठा भाग है, विदेशी बैंकों में पड़ा धन भी इस किसानी सहायता का 3–4 गुना है। बैंकों के डिफॉल्टरों के खिलाफ जो पैसा है वह भी इस राशि का दुगने से भी अधिक है। अब ये तीनों कार्य तो मोदी जी के अधिकार क्षेत्र में हैं। हां अंतर इस बात का अवश्य है कि आवश्यक किसको माना जाता है? देश की ताकत खेती–किसानी–मजदूर को मानते हैं या विदेशी निवेश को।

जाट रत्न व प्रेरणास्रोत दानवीर सेठ चौधरी छाजूराम

जननी जने तो भक्त जन या दाता या शूर।
नहीं तो जननी बांझ रहे, काहे गवावे नूर।।

प्रकृति के हर स्थान पर, हर कोने में सौन्दर्य विराजता है, चाहे वह अपेक्षाकृत पिछड़ा देहात ही क्यों न हो। इसके गर्भ से भी अमूल्य हीरे निकलते रहे हैं। पारखी चाहिये, तराशने वाला चाहिये। वास्तविक भारत का दर्शन ग्रामीण अंचल में ही किया जा सकता है। ग्रामीण धरती सोना–चांदी उगलती रही है। इसी ग्रामीण अंचल में गुदड़ी के लाल होते रहे हैं। इसी ग्रामीण धरा ने श्रीकृष्ण व शिवा जैसे नीतिमान, राम जैसे मर्यादा पालक, हनुमान से वीर, भीम से पराक्रमी, अर्जुन से धनुर्धारी, भीष्म से यति, महर्षि दयानन्द से समाज सुधारक, शंकराचार्य जैसे योगी, गौतम, कपिल, कणाद और कुमारिल भट्ट जैसे विद्वान, महाराणा प्रताप जैसे शूरवीर, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, राजगुरू सुखदेव, भगत सिंह जैसे सहसों क्रान्तिकारी महान आत्माओं को अपने अंचल में पाला है। इसी देहाती धरा ने उन महान विभूतियों को जन्मा है जिन्होंने हर प्रकार की संकीर्णताओं से, चाहे वह धर्म की हो, चाहे मजहब की हो, चाहे जाति की हो, चाहे अन्य किसी तरह की भी हो जिनसे आज का युग बदबू मारता है, उनसे उबरकर मानवता की सेवा की है। इसी ग्रामीण धरा ने लाला लाजपतराय, लालबहादुर शास्त्री, मुंशी प्रेमचन्द, हरिशन्द्र, दधीची, सेठ भामाशाह, कर्ण से दानी जैसे अनपढ़ हीरों को गढ़ा है जिन पर हमें गर्व है। दानवीर सेठ छाजूराम जी भी इसी कतार में जुड़े आधुनिक युग के भामाशाह है। वे ऐसे महापुरूष हुए हैं जिनका समस्त जीवन अपने परिश्रम से बना एक लम्बा अफसाना है।

कहाँ अलखपुरा और कहाँ कलकता? कहाँ राजा भोज और कहां गगूं तेली? यथार्थता के धरातल पर यदि सोख जाए तो परिश्रम और ईमानदारी क्या–क्या नहीं करवा सकते? चौ. छाजूराम ने खूब कमाया, शान से कमाया परन्तु मजे की बात तो यह है कि उन्होंने खूब दान किया। जनहित के लिए खूब खर्च किया, धर्म के नाम पर, शिक्षा–संस्था प्रकाश के नाम पर, मानवता के नाम पर, जाति उत्थान के नाम पर, आर्य समाज के नाम पर, वैदिक धर्म के नाम पर, वेद प्रचार के नाम पर, प्रेरणादायक राष्ट्रवादी साहित्य के प्रकाशन के नाम पर, राष्ट्र हिताय सुरक्षा के नाम पर दिए जाने वाले दानवीरों की पंक्ति में सेठ चौ. छाजूराम का नाम उज्ज्वल नक्षत्र के समान अग्रण्य है।

जन्म तथा शिक्षा : महाकवि कालिदास ने महाराजा रघु के जन्म के विषय में अपने महाकाव्य रघुवंश में लिखा है कि "भवों हि लोकाभ्युदयाय तादृशाम्" अर्थात रघु जैसे महापुरूषों का जन्म संसार के कल्याण के लिए होता है। ठीक उसी प्रकार लोक कल्याण के लिए ही दानवीर सेठ चौ. छाजूराम का जन्म 28 नवम्बर सन् 1861 को जाट क्षत्रिय लाम्बा वंश में अलखपुरा गांव (भिवानी) में हुआ। इनके पिता का नाम चौ. सालिगराम था। दानवीर चौ. छाजूराम के पूर्वज सीकर के निकटवर्ती गोठरा से आकर आबाद हुए। वहां से चलकर ढाणी माहू में बसे। ये लाम्बा आर्य क्षत्रिय पूर्वज एक अंग्रेज की जमीदारी में सामान्य जीवन व्यतीत करते थे। आपके पितामह चौ. मनीराम लाम्बा ढ़ाणी माहू गांव को छोड़कर सिरसा में जा बसे। लेकिन कुछ दिनों बाद अपके पिता चौ. सालिगराम लाम्बा सिरसा से नारनौंद (हांसी) में आकर बस गए। चन्द दिनों वहां बसेरा कर आपके पिता जी अज्ञात कारणवंश सन् 1860 में नारनौंद छोड़कर अलखपुरा गांव में जा बसे। यह गांव हांसी से कुछ दूर भिवानी जिले की तहसील बवानीखेड़ा के समीप स्थित है।

आपने प्रारम्भिक शिक्षा बवानीखेड़ा गांव के प्राथमिक स्कूल से प्राप्त की। आप आरम्भ से ही तीव्र बुद्धि बालक थे एतदर्थ हर बात को शीघ्र ही समझ लेते थे। पढ़ाई में आपकी रूचि को देखते हुए आपके पिता जी ने माध्यमिक शिक्षा के लिए आपको भिवानी के राजकीय स्कूल में प्रविष्ट करवा दिया। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' यह युक्ति आप पर पूर्णतया चरितार्था होती थी। कठोर परिश्रम व अनुशासन के मतवाले इस बालक पर गुरूजनों की आशीष वर्षा होने लगी। गुरूजन की प्रेरणा से यह बालक अध्ययन की उन्नत पराकाष्ठा को छूने लगा। मिडल कक्षा में अच्छे अंक लेकर उर्तीर्ण होने के बाद बालक छज्जू को रिवाड़ी के हाई स्कूल में प्रविष्टी मिल गई। रिवाड़ी से मैट्रिक की परिक्षा उर्तीण करते ही इनके अध्ययन में व्यवधान आ पड़ा। पारिवारिक परिस्थितियोंवश बालक छाजूराम अग्रिम पढ़ाई न कर सका। उल्लेखनीय है कि चौ. छाजूराम के पिता जी की आर्थिक स्थिति उन दिनों अच्छी खासी न थी। इस बात का पता हमें 'अलखपुरा से कलकता' नामक पुस्तक जो मेरे अग्रेज भ्राता प्रताप सिंह शास़्री ने लिखी है, से पढ़कर चलता है।

विवाह : दानवीर सेठ चौ. छाजूराम का विवाह डोकहा (दादरी तहसील) ग्राम की सुन्दर कन्या से हुआ। विवाह के कुछ दिनों बाद हैजे की बीमारी के कारण वह स्वर्ग सिधार गई और उससे कोई सन्तान नहीं हुई थी। तत्पश्चाद् दूसरा विवाह गांव निलावल (भिवानी) की बुद्धिमत्ती कन्या लक्ष्मी देवी से 1890 के आसपास हुआ। वह साक्षात् ही लक्ष्मी का रूप बनकर आई। इससे आपको 6 सन्तानें उत्पन्न हुई। सबसे बड़ा पुत्र सज्जन कुमार जो युवावस्था में ही स्वर्ग सिधार गया। उससे छोटा पुत्र जो छोटी आयु में ही परमात्मा को प्यारा हो गया। कमला देवी नामक पुत्री बचपन में ही स्वर्गधाम चली गई। दो सुपुत्र महेन्द्र कुमार व प्रद्युम्न कुमार आजकल दिल्ली, कलकता, अलखपुरा तथा शेखपुरा में निवास करते हैं। उनकी दूसरी पुत्री सावित्री देवी भारतवर्ष के प्रसिद्ध डॉ. भूपाल सिंह के सुपुत्र डॉ. नौनिहाल सिंह मेरठ निवासी के साथ परिणय सूत्र में बन्धी थी जिनका समाज में अच्छा रूतबा है।

हजारी बाग कलकता को प्रस्थान : अध्ययन काल में चौ. छाजूराम का सम्पर्क आर्य समाजी इंजीनियर शिवनाथ राय साहिब तथा रिवाड़ी में रेलवे स्टेशन मास्टर का स्थानान्तरण रिवाड़ी से कलकता हो

गया। वे चौ. छाजूराम को अपने साथ हजारी बाग कलकता ले गए। वहां रहकर आप बंगाली स्टेशन मास्टर के बच्चों को पढ़ाने लगे और अपने रोजगार व कार्य की तलाश में तत्पर रहने लगे। उसीसमय आपका संपर्क राजगढ़ के सेठ जी के साथ हो गया। उनका कलकत्ता में व्यापार चलता था। उससमय कलकत्ते के व्यापार पर मारवाड़ी सेठों का कब्जा था, वे अंग्रेजी नहीं जानते थे। अतः आप बतौर मुंशी उनके पत्र अंग्रेजी में लिख दिया करते थे जिसके कारण आपको व्यापार की अत्यधिक बातों का ज्ञान हो गया। आपने अपनी कुशाग्र बुद्धि से शीघ्र ही दलाली के व्यापार को भी समझ लिया तथा बहुत शीघ्र ही पटसन के व्यापार में सम्मिलित हो गए।

व्यापार में प्रवेश : स्टेशन मास्टर को 6–7 मास बाद कोई अपना परिचित स्थानीय बंगाली अध्यापक उसके बच्चों को पढ़ाने के लिए मिल गया। उसने चौ. छाजूराम को वापिस हरियाणा लौट जाने को कहा लेकिन युवक छाजूराम पर मानों मुसीबतों का पहाड़ टूट गया। घर वापिसी के लिए उनके पास किराया भी न था लेकिन उन्होंने ध ैर्य नहीं छोड़ा। राय बहादुर नरसिंगदास जोधराज भिवानी उनकी जिंदगी में बहार बनकर आए जो कलकत्ता में ही व्यापार करते थे। उनकी सहायता से चौ. छाजूराम ने व्यापार जगत में प्रवेश किया।

कुछ समय बाद ही चौ. छाजूराम को एण्डरू यूल एण्ड कंपनी में दलाली का काम मिल गया। इस कंपनी से चौ. साहब को 75 प्रतिशत दलाली मिलती थी। यह अंग्रेजी कंपनी थी, इस कंपनी में जूट का कारोबार था। कलकत्ता में रहते हुए चौ. छाजूराम ने अपने सद्व्यवहार से व्यापार जगत की जानी मानी हस्तियों श्री जयनारायण, श्री रामचन्द्र, श्री ताराचंद, श्री घनश्यामदास बिड़ला, रामगढ़िया आदि सेठों से अपनी मित्रता स्थापित कर ली। धीरे–धीरे चौ. छाजूराम कलकत्ता में परिश्रमपूर्वक कंपनियों के हिस्से खरीदते रहे और अन्य ख्याति प्राप्त सेठों के बराबर के ही हो गये। कुछ ही समय बाद चौ. छाजूराम ने कलकत्ता में जूट का कारोबार पूर्ण रूप से अपने हाथ में ले लिया। कलकत्ता की मार्किट में वे 'जूट के बादशाह' के नाम से विख्यात हो गये। देश के बड़े–बड़े करोड़पतियों में उनकी गणना की जाने लगी।

व्यापार चरम सीमा पर : चौ. छाजूराम कलकत्ता की 24 कंपनियों के सबसे बड़े शेयर होल्डर (हिस्सेदार) थे। जिनमें से दस एण्डरू यूल एण्ड कंपनी, दो आबारा हर्टा, दस बर्ड एण्ड कंपनी और दो जार्डन एण्ड कंपनी के थे। एण्डरू यूल एण्ड कंपनी की दस और बिड़ला ब्रादर्स की दो, कुल 12 कंपनियों के आप निदेशक थे। आप पंजाब नैशनल बैंक के भी निदेशक रहे। आपको इन हिस्सों (शेयरों) के कारण 16 लाख रूपये प्रति वर्ष लाभांश मिलता था। आपका व्यापार चरम सीमा पर था। आप समुद्री जहाज भरकर विदेशों में पटसन भेजते थे। करोड़ों रूपया बैंकों में जमा था। 24 कंपनियों के 75 प्रतिशत हिस्से आपके थे। कलकत्ता में सैंकड़ों एकड़ भूमि में हुगली नदी व रेलवे स्टेशन कलकत्ता के पास बाग था। कलकत्ता के बाजार में कई लेट थे। चितरंजन ऐवन्यू पर कई मंजिला निवास था। सैंट्रल एवेन्यू कलकत्ता में आलीशान कोठियों के अतिरिक्त शानदार वैभव युक्त एक अतिथि भवन था जो उन दिनों पांच लाख रूपये की लागत से निर्मित था। हिसार में पांच संपूर्ण गांव आपके थे। अलखपुरा और शेखपुरा में दो शानदार कोठियां थीं। खन्ना (पंजाब) में मूंगफली का कारखाना था। कलकत्ता में छह शानदार कोठियां थीं आदि–आदि धन दौलत तथा बहुमूल्य "रोल्स रॉयल" कार थी जिसकी कीमत उन दिनों एक लाख थी।

आपने इस प्रकार अपने कठोर परिश्रम तथा खून पसीने से ईमानदारी व नेक नियति से कमाकर अतुल धन दौलत के दर्शन किए। इसी अतुल धन दौलत की कमाई के साथ–साथ दिल खोलकर उदारता से दान भी किया।

दानवीर सेठ चौ. छाजूराम द्वारा लोक कल्याणार्थ एवं शिक्षा संस्थान, प्रकाशार्थ दान योग्यता : दानवीर सेठ चौ. छाजूराम ने कहा था कि "इतना धन होने की दशा में मनुष्य को जो दुर्व्यसन लग जाते हैं, मैं आर्य समाज के संसर्ग से उनसे बचा रहा। जिस प्रभु ने मुझ पर इतनी कृपा की उनके नाम पर, जो भी दान करूं वही थोड़ा है।"

सेठ छाजूराम ने देश को उन्नति के शिखर की ओर ले जाने के लिए शिक्षा को माध्यम बनाया। उन्होंने शिक्षा के प्रसार व प्रचार के लिए अपने खजाने का मुंह खोल दिया और सैंकड़ों शिक्षण संस्थाएं स्थापित करने में अहम भूमिका अदा की।

स्वामी श्रद्धानंद जी ने गंगा के किनारे हरिद्वार में जिस गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की उसमें सेठ चौ. छाजूराम ने दिल खोलकर दान दिया। कनखल में डॉ. संसार सिंह ने जो कन्या गुरुकुल बनवाया उसके भवन निर्माण में सबसे अधिक धन चौ. छाजूराम ने दिया। वृंदावन व वोलपुर गुरुकुलों में दिये गए दान का विवरण वहां के पत्थरों पर अंकित शब्द दानवीरों की कहानी कह रहे हैं जिनमें सर्वोच्च नाम सेठ चौ. छाजूराम का है।

दानवीर सेठ चौ. छाजूराम कलकत्ता में 19 विधान सरणी आर्य समाज कलकत्ता की प्रबंधक कमेटी के कोषाध्यक्ष थे। 'आर्य सभा कलकत्ता का इतिहास' पुस्तक के लेखक प्रो. उमाकांत उपाध्याय के अनुसार सन् 1855 ई. में आर्य समाज कलकत्ता की स्थापना में लक्ष्मी और सरस्वती का अच्छा संगम हो गया था। राजा तेजनारायण धनवान, संपन्न और श्रद्धावान व्यक्ति थे तथा आर्य समाज के प्रथम प्रधान थे। वे आर्य समाज के लिए धन देने में भी नहीं हिचकते थे। थोड़े ही दिनों बाद दानवीर चौ. छाजूराम, सेठ जयनारायण पोद्दार, लाला रघुमल जी, रायबहादुर रलाराम जी इत्यादि संपन्न व्यक्तियों का आर्थिक सहयोग आर्य समाज कलकत्ता को मिलने लगा। आर्य समाज कलकत्ता 19 विधान सरणी पहले 19 कार्नवालिस स्ट्रीट नाम से था। इसके ट्रस्टियों में 9 व्यक्तियों के नाम उल्लेखनीय हैं जिनमें तीसरे नंबर पर दानवीर सेठ चौ. छाजूराम (जो पेशा ब्रोकरेज का काम करते थे ऐसा लिखा है) का नाम ट्रस्टियों में लिखा है। भूमि इन नौ व्यक्तियों के नाम ट्रस्ट के लिए खरीदी गई थी। सन् 1910 का आर्य समाज कलकत्ता के भवन बन चुके थे जिनमें अधिकतर योगदान सेठ चौ. छाजूराम का था। इन्हीं दिनों सेठ छाजूराम ने स्त्री शिक्षा की

अनिवार्यता को समझते हुए आर्य कन्या पाठशाला के लिए विशाल ध न राशि दान में दी थी।

सन् 1877 में लाहौर में आर्य समाज स्थापित हो चुका था। सन् 1883 में महर्षि दयानन्द मोक्षधाम चले गए और उनकी स्मृति में डी.ए.वी. हाई स्कूल एवं डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर की स्थापना हुई। जिन दिनों डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर आर्थिक संकट से गुजर रहा था, उन्हीं दिनों एडवोकेट लखपतराय, बाबू चूड़ामणि, डॉ. रामजीलाल तथा महात्मा हंसराज सेठ चौ. छाजूराम के पास दान मांगने गये तो पहले उन्होंने 21 हजार फिर 31 हजार रुपये मांगने का विचार किया। परंतु सेठ चौ. छाजूराम ने उनको आशा से अधिक 50 हजार रुपये दान दिया। इसका उल्लेख डॉ. रामजीलाल की डायरी में मिलता है।

सन् 1886 में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने हिसार में आर्य समाज नागोरी गेट की स्थापना की। दानवीर सेठ छाजूराम हिसार जिला के निवासी थे। अतः हिसार क्षेत्र के प्रबुद्ध आर्य महापुरुषों (सेठ चन्दूलाल तायल, बाबू चूड़ामणि एडवोकेट, पं. लखपतराय एडवोकेट, डॉ. रामजीलाल हुड्डा सिविल सर्जन हिसार, लाला हरिलाल तायल, राजमल जैलदार खाण्डा निवासी, शीशराम आर्य भजनोपदेशक, लाला लाजपतराय आदि) के साथ दानवीर सेठ छाजूराम जी के मैत्री संबंध थे। चौ. छाजूराम ने आर्य समाज के भवन निर्माण के लिए उस समय जो दान दिया वह स्मरणीय है।

सन् 1909 में अनाथालय भिवानी की स्थापना में चौ. छाजूराम जी ने दिल खोलकर दान दिया। महात्मा हंसराज के शिष्य भानीराम गांव गंगाना (सोनीपत) ने रोहतक में जाट हाई स्कूल खोलने का निर्णय लिया परंतु अचानक चेचक के कारण उनकी मृत्यु हो गई। इसके बाद चौ. बलदेव सिंह धनखड़, चौ. मातूराम सांघी, डॉ. रामजीलाल इत्यादि के प्रयासों से सन् 1913 में रोहतक में जाट एंग्लो वैदिक हाई स्कूल की स्थापना हुई। 1916 में जब रोहतक जाट स्कूल का वार्षिक सम्मेलन रखा गा तो इस अवसर पर सेठ चौ. छाजूराम को भी निमंत्रण दिया गया। दानवीर सेठ चौ. छाजूराम ने सम्मेलन अवसर पर 61 हजार रुपये दान में दिए तथा मंच में घोषणा की कि जो छात्र इस वर्ष मैट्रिक परीक्षा में प्रथम रहेगा। उसे सोने का मैडल तथा कॉलेज की पढ़ाई के लिए 12 रुपये मासिक वजीफा दिया जायेगा। यह सम्मान उस समय चौ. सूरजमल (हिसार) ने प्राप्त किया।

सेठ चन्दूलाल तायल की मृत्यु के बाद जब सन् 1918 में हिसार में सी.ए.वी. हाई स्कूल की स्थापना हुई तो दानवीर सेठ चौ. छाजूराम ने 61 हजार रुपये दान भवन निर्माणार्थ दिया तथा 50 हजार रुपये उन छात्रों के लिए छात्रवृत्ति हेतु दिए जो मेधावी छात्र हों तथा शिक्षा पूरी होने तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।

हिसार में सन् 1920–21 में आपने जाट एंग्लो वैदिक हाई स्कूल की स्थापना का विचार बनाया। खरड़ गांव के एक व्यक्ति की जमीन खरीदी गई और दानवीर सेठ छाजूराम ने अपने पुत्र की स्मृति में पांच लाख रुपया लगाकर भवनों का निर्माण करवाया जिसका उद्घाटन तत्कालीन पंजाब के गवर्नर ने सन् 1925 में किया। आज यह संस्था डिग्री कॉलेज, बी.एड. प्रशिक्षण कॉलेज, पब्लिक स्कूल, लॉ कॉलेज, स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रूप में विस्तृत होकर इस क्षेत्र में शिक्षा की ज्योत जलाये हुए हैं।

संगरिया विद्यापीठ जो सन् 1917 में जाट हाई स्कूल के रूप में स्थापित हुआ था, वहां भी बहुत बड़ी राशि दानवीर सेठ चौ. छाजूराम ने दान में दी। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ दिल्ली, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार (पुराना भवन कांगड़ी गांव के पास) का भवन निर्माण चौ. छाजूराम ने करया। गुरुकुल वृंदावन, गुरुकुल कुरुक्षेत्र आदि को भी आर्थिक सहयोग दिया। गांव खाण्डाखेड़ी हिसार में आर्य समाज मंदिर व आर्य कन्या पाठशाला का निर्माण भी उनके सहयोग से हुआ। जिन दिनों पं. मदन मोहन मालवीय जी बनारस में हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए दान राशि एकत्रित करते घूम रहे थे, सेठ छाजूराम ने सबसे अधिक 11 हजार रुपये की राशि दान में थी।

सन् 1920 में कांग्रेस अधिवेशन होने पर लाला लाजपतराय को कांग्रेस प्रधान बनाया गया। इस दानवीर ने अपने मित्र के सम्मान में प्रीतिभोज का आयोजन कर लोगों का मन मोह लिया। सन् 1929 में रावी नदी के किनारे लाहौर में कांग्रेस अधिवेशन में पं. जवाहरलाल नेहरु प्रधान बने तो इस अवसर पर सेठ छाजूराम ने राजमल जैलदार को प्रेरित कर किसानों का जत्था लाहौर भिजवाया। सन् 1925 में अखिल भारत वर्षीय जाट महासभा के पुष्कर अधिवेशन में जिसके सभापति भरतपुर महाराज श्री कृष्ण सिंह थे, उसका सारा व्यय चौ. छाजूराम जी ने दिया। जब रविन्द्रनाथ टैगोर ने शांति निकेतन विद्यालय का वार्षिक अधिवेशन किया और सभी धनाढ्य व्यापारियों से वहां पधारने की प्रार्थना की तब छोटा व्यापारी समझकर उन्हें अधिवेशन में आमंत्रित नहीं किया गया। अपने मित्र सेठ बिड़ला के कहने पर वे अधिवेशन में सम्मिलित हुए। जब टैगोर जी झोली फैलाकर सबके पास दान राशि लिख रहे थे तो सभी ने अपनी–अपनी दान राशि की रसीदें प्राप्त कर ली। अंततः रविन्द्रनाथ टैगोर चौ. छाजूराम के पास पहुंचे तो सेठ जी ने कहा कि आप रसीदों में से सबसे अधिक दान वाली रसीद निकालो तो 5 हजार रुपये की बिड़ला जी की थी। उसी समय चौ. छाजूराम ने 20 हजार रुपये की राशि दान में दी तथा सभी को दुगुनी राशि करने को कहा। कहते ही सभी ने दुगुनी राशि दान में दे दी। यह देखकर रविन्द्रनाथ टैगोर चकित रह गए।

कलकत्ता में श्री चितरंजन दास की स्मृति में एक स्मारक बनाने के लिए महात्मा गांधी दान एकत्रित कर रहे थे। गांधी जी चौ. छाजूराम के पास भी आये तथा दान की अपील की। दानवीर सेठ चौ. छाजूराम ने गांधी जी से कहा कि इसी उद्देश्य के लिए एक पार्टी को ग्यारज हजार रुपये दान दे चुका हूं। आपको ये मेरे बैंक खाते की चैक बुक दे रहा हूं आपकी जो इच्छा हो वह राशि आप स्वयं भर लें। गांधी जी ने एकत्रित की गई राशि में 10 हजार की कमी बताई। धन्य हैं सेठ छाजूराम जिसने यह सुनते ही दस हजार रुपये गांधी जी

को नकद भेंट कर दिये। इतना ही नहीं इससे पूर्व जब गांधी जी देश की स्वतंत्रता के लिए, आंदोलन चलाने के लिए धन एकत्रित कर रहे थे तब सेठ छाजूराम से उन्होंने दान देने के लिए कहा। गांधी जी ने सोचा था यह व्यक्ति क्या दान देगा? तब सेठ भामाशाह की याद को ताजा करते हुए चौ. छाजूराम ने कहा था कि महात्मा जी् जब समस्त कलकत्ता में दान राशि एकत्रित हो जाए तब मेरे पास आना। गांधी जी दान राशि एकत्रित कर पुनः उनके पास आये तो धन्य हैं चौ. छाजूराम जिन्होंने अकेले ही उतनी राशि गांधी जी को दान में देकर सम्मान के साथ विदा किया। जितनी समस्त कलकत्ता में एकत्रित हुई थी और गांधी जी स्वयं इस दान पर आश्चर्य कर रहे थे। महात्मा गांधी ने चौ. छाजूराम को सेठ की उपाधि से तब विभूषित किया था।

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का दानवीर सेठ छाजूराम से निकट का संबंध व मित्रता थी। जिन दिनों पं. मोतीलाल नेहरु कांग्रेस के प्रधान बने तब नेता जी सुभाष चन्द्र व उन्हें कलकत्ता बुलाकर उनका अभिनन्दन किया गया। इस समारोह का सारा खर्च दानवीर सेठ चौ. छाजूराम ने नेता जी सुभाष चन्द्र बोस को सहर्ष दिया था। इसके अतिरिक्त कांग्रेस द्वारा चलाये जाने वाले आंदोलनों के लिए भी अलग से समय–समय पर दान दिया वह अत्यधिक स्तुत्य है।

सेठ चौ. छाजूराम की देशभक्ति भी छुपने–छुपाने वाली नहीं है। कलकत्ता में उनकी कोठी अंग्रेजों की विशेष कालोनी में थी। उनकी मित्रता देशभक्त, आंदोलनकारी, विद्रोही, क्रांतिकारी आर्य पुरुषों से थी। इसका स्पष्ट प्रमाण है कि साण्डर्स वध के बाद क्रांतिकारी देशभक्त सरदार भगत सिंह खाण्डा खेड़ी निवासी (हिसार) के जैलदार राजमल की योजना के तहत कलकत्ता में सेठ छाजूराम की कोठी पर पहुंचे और एक महीना तक वहां रहे। भगत सिंह का टोप वाला चित्र उसी समय का है। दानवीर सेठ छाजूराम की कोठी में ऊपरी मंजिल पर रहते हुए सेठ जी की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी जी स्वयं भोजन बनाकर भगत सिंह को देती थी जबकि परिवार का भोजन नौकर ही बनाते थे।

अकाल पीड़ितों व बाढ़ पीड़ितों की सहायता में भी वे कभी पीछे नहीं रहे। संवत् 1956 के भयंकर अकाल में, सन् 1930 के भयंकर अकाल में, सन् 1914 में दामोदर घाटी में भयंकर बाढ़ के समय, सन् 1935 में क्वेटा में भूकंप के आने से विनाशकारी समय में, सन् 1909 में देश में प्लैग की महामारी के समय, सन् 1918 में कार्तिक की बीमारी के समय आदि अनेक अवसरों पर सेठ छाजूराम ने अपनी दान राशि भेजकर जगह–जगह आवश्यकता अनुसार आर्थिक सहायता की जिससे मनुष्य जाति के अतिरिक्त पशुओं को भी राहत मिली और उनकी जीवन रक्षा हुई।

भिवानी में पीने के पानी का संकट गहरा गया था। यह सन् 1928 की बात है चौ. घासीराम तहसीलदार, पं. नेकीराम शर्मा, श्रीदत्त वैद्य आदि एक डैपूटेशन बनाकर कलकता पहुंचे। सेठ छाजूराम ने इन्हें 2.50 लाख रुपया कलकता से दान दिलवाया तथा 50 हजार रुपया स्वयं अलग से दान दिया।

महाराजा भरतपुर अंग्रेजों के कर्जदार हो गए थे और अपने कर्मचारियों, सैनिकों को वेतन देने में आर्थिक संकट से जूझ रहे थे तब महाराजा ने अपने राजस्व मन्त्री भालोट निवासी चौ. लालचन्द को कलकता में सेठ छाजूराम के पास सहायतार्थ भेजा। चौ. छाजूराम ने 2.50 लाख रुपया नकद देकर आर्थिक संकट में भरतपुर के महाराजा सर कृष्ण सिंह की सहायता की। यह घटना सन् 1926 की हैं।

स्वामी रघुनाथ की योजना के अनुसार भिवानी में जन–स्वास्थ्य कार्य के लिए चौ. छाजूराम ने अपनी पुत्री कमला की स्मृति में 5 लाख रुपये देकर लेडी हैली हॉस्पिटल का निर्माण करवाया। भिवानी जिला के मिराण गांव में विशाल जल कुण्ड बनवाया। वैदिक एवं लौकिक साहित्य के प्रति भी दानवीर सेठ चौ. छाजूराम जागरूक थे। उन्होंने सन् 1910 में चारों वेदों का भाष्य लिखने के लिए वैदिक विद्वान आर्यमुनि से प्रार्थना की। जब भाष्य पूरा हुआ उसकी छपाई का सारा खर्च चौ. छाजूराम ने वहन किया। लौकिक साहित्य में श्री कलिका रंजन कानूनगो से जाट इतिहास लिखने की प्रार्थना की जो 'हिस्ट्री ऑफ जाट्स' शीर्षक से अंग्रेजी में छपा। जिसके प्रकाशन में दानवीर सेठ छाजूराम ने आर्थिक सहयोग दिया।

सामान्य परिस्थिति रहते हुए भी एक श्रेष्ठ पुरूष अपने पुरूषार्थ व ईमानदारी से कैसे उच्च कोटी तक पहुंच सकता है इसका उदाहरण बाबू छाजूराम जी के सफल जीवन से मिलता है। इस लेख में उनका सम्पूर्ण जीवनवृत नहीं लिखा जा सकता है। मैंने अल्पीयांस सा प्रयास किया है। दीनबन्धु चौ. छोटूराम का उनसे कैसे सम्पर्क हुआ, उन्होंने उसे पढ़ने में सहायता की तथा राजनीति में भी उनके मार्गदर्शक बने रहे यह अलग प्रकरण बन पड़ा है फिर भी संक्षिप्त रूपेण लिखा जा रहा है।

सेठ चौ. छाजूराम की मुलाकात गाजियाबाद स्टेशन पर युवक छोटूराम से हुई। बातों ही बातों में चौ. छाजूराम ने भांप लिया कि यह युवक छोटूराम को आश्वस्त करते हुए कहा कि "यदि तुम संस्कृत से बी.ए. करना चाहते हो तो मैं तुम्हारा सारा खर्चा दूंगा। तुम पढ़ों, आर्थिक समस्या से तृस्त हुए अपनी मंजिल को मत छोड़ों।" इस प्रकार युवक छोटूराम ने ऐसा ही किया। स्मरण रहे कि सर छोटूराम ने चौ. छाजूराम को धर्म–पिता मान लिया और तो जिन्दगी अहसानमन्द होकर उनका आदेश शिरोधार्य रखा। सर छोटूराम जो कुछ भी बने दसका सारा श्रेय सेठ छाजूराम को जाता है। राजनीति के शीर्ष पर पहुंचकर सर छोटूराम ने पंजाब की राजनीति को हिला कर रख दिया।

आगे चलकर सन् 1926 में सर छोटूराम की यूनियनिष्ट पार्टी से चौ. छाजूराम एम.एल.सी. बने। पंजाब में सन् 1926 का यह चुनाव शहरी वर्सिज देहात लड़ा गया था, जिसमें सेठों ने चौ.

छोटूराम जी की जमीदारा लीग पार्टी को हराने में पूरी ताकत झोंकी थी। चौ. छाजूराम यह चुनाव में कूद पड़े तथा अपने प्रतिद्वन्दी उम्मीदवार लाला लाजपतराय को भारी मतों से हराया। सेठ छाजूराम गन्दी राजनीति से सदैव दूर रहे। सन् 1928 में चौ. छाजूराम के बड़े सुपुत्र सज्जन कुमार एम.एल.सी. बने। सत्य है कि चौधरी छोटूराम और दानवीर सेठ चौ. छाजूराम का सम्बन्ध ठीक वैसा ही प्रतीत होता है जैसा मार्क्स और एंगेल्स का सम्बन्ध, देशभक्त महाराजा प्रताप और दानवीर भामाशाह का सम्बन्ध था।

अपने समय के भामाशाह दानवीर सर सेठ चौ. छाजूराम ने प्रेरणा स्रोत सद्गार व्यक्त करते हुए कहा था कि – "मैंने एक ऐसी जाति में जन्म लिया है, यहां व्यापार कभी किसी ने नहीं किया, मैं वही कार्य करता हूँ। मैंने दरिद्रता की चरम सीमा अपने जीवन में देखी है जबकि आज लोग मुझे करोड़पति कह देते हैं। जितना में दान देता हूं उतना ही अधिक भगवान मुझे लाभ दे देते हैं। मेरी इच्छा रुपया कमाकर गरीबों का उद्धार, शिक्षा और कल्याण के कार्य करने की थी। वह भगवान की दया से लगभग पूरी हो गई, अब बेशक मैं परम पिता परमात्मा को प्यारा हो जाऊ। मेरी कोई विशेष इच्छा शेष नहीं हैं।"

सेठ चौ. छाजूराम का यह कथन हमें आलोकित कर रहा है, प्रेरित कर रहा है कि "यदि तुम प्राप्त करना चाहते हो तो अर्पित करना सीखों।" इस सनातन नियम का उन्होंने अपने जीवन में अच्छी प्रकार से अनुभव करके देखा। हमारे वेदशास्त्र कहते हैं कि –

दानं भोगो नाशः तिस्रः गतयो भवन्ति वित्तस्य।
या न ददाति न भङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।

इस वेद शिक्षा का सेठ छाजूराम ने सदैव आचरण किया। खूब कमाया, खूब भोग किया और खूब दान दिया। धर्म ग्रन्थ बाइबिल कहता है – तीन सद्गुण हैं – आशा, विश्वास और दान। दान इनमें सबसे बढ़कर है। वास्तव में चौ. छाजूराम का जीवन बाइबिल के कथन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। दान देने में ख्याति की पराकाष्ठा ने भी उनको गर्वीला नहीं बनाया। व्यापार की चरम सीमा का कभी भी उन्होंने लेशमात्र भी अभिमान नहीं किया। वास्तव में वे इन्सान ही नहीं देवता थे।

7 अप्रैल 1943 का वह दुर्दिन था जब अपने समय के सेठ भामाशाह चौ. छाजूराम चार महिने की लम्बी बीमारी के बाद स्वर्ग सिधार गए। उस दिन सर छोटूराम बहुत रोये थे। सेठ घनश्यामदास बिड़ला व उनके भाई जुगल किशोर बिड़ला शव यात्रा में सम्मलित थे, उनकी अश्रुधारा भी रूक नहीं पा रही थी। दीनबन्धु चौ. छोटूराम ने उनके निधन पर कहा था कि "भारवर्ष का महान दानवीर गरीबों और अनाथों का धनवान पिता, पतितोद्धारक तथा मेरे धर्म पिता आज अमर होकर हमारे लिए प्रेरणास्रोत बन गये। मैं अपने पिता के महाप्रयाग पर श्रद्धाज्जलि अर्पित करता हूं और उनकी इच्छाओं, आकांक्षाओं के अनुसार कार्य करने का संकल्प लेता हूं।"

ऐसे महादानी, महामानव का जन्म पुनः इस धरणी पर हो इसी चाहत के साथ उन्हें शत–शत प्रणाम करता हूँ।

चला जाऊँगा जब मैं छोड़कर आशियाने को।
वफाएं याद आएंगी मेरी इस जमाने को।।

बोया पेड़ बबूल का

कहते है शादी के पहले आदमी सुपरमैन, शादी के बाद जेंटलमैन, शादी के पांच साल बाद वाचमैन और शादी के दस साल बाद वाचमैन और शादी के बीस साल बाद स्पाइड़रमैन बन जाता है। घर–गृहस्थी के मकड़जाल में उलझा महंगाई की मार को झेलता कभी शादी के मुहुर्त को कोसता है, तो कभी बीवी से झगड़ता, तो कभी–कभी बच्चों को पीटकर अपनी भड़ास निकालता है कबीर ने ठीक कहा है –

करना था सो क्यों किया, अब करि क्यों पछताएं,
बोया पेड़ बबूल का, तो आम कहां से पाए।

अब पछताने से क्या होना। किसी ने सही कहा है, शादी ऐसा लड्डू है जो खाए सो पछताए और जो न खाए सो भी पछताए। जब पछताना ही है तो खाकर पछताए। आज जीवन में अनेक बबूल हैं। एक बाप चार–चार बबलुओं को पालता है किन्तु चार बबूल मिलकर एक बाप को नहीं पाल सकते। पारिवारिक–सामाजिक जीवन से आस्था नदारद हो गई है। पतिश्री दर्द से कराह रहे हैं और पत्नी जी किटी पार्टी में व्यस्त हैं। संवेदना शून्य हो गए हैं सामाजिक सरोकार। मर्यादा, किसके साथ क्या व्यवहार हो सब भूल गए हैं। छोटे–बड़े की मर्यादा तिलमात्र भी देखने को नहीं मिलती। सब कुछ अस्त–व्यस्त। बड़ों के आदेंशों की अवहेलना अब हेकड़ी–बहादुरी मानी जाती है आईने पर अब्दुलरब सादा साहब कहते हैं –

आदमी नकाबों में खुद को क्या समझता है,
आदमी कैसा है ये आइना समझता है।

कई ढ़ोगी, पाखंड़ी भी हैं जो पूरा–पाठ, तंत्र–मंत्र की आड़ में अपना उल्लू सीधा करते हैं। प्रपंच–पाखंड जब पकड़ा जाता है तो जेल की हवा खाते हैं। बाहर से साधु और अंदर से शैतान। इसी संदर्भ में बच्चन जी की पंक्तियां –

मैं छिपाना जानता तो जग मुझे साधु समझता
शत्रु, मेरा बन गया है छलरहित व्यवहार मेरा।

अब घर झूठ बोलने के लिए ट्रेंनिंग सेंटर हो गए हैं। घर में बैठे हुए हैं टेलीफोन की घंटी बजती है। बच्चे से कहते हैं, फोन उठाओ। कौन है? कह दो पापा घर पर नहीं हैं – ऐसी घटनाएं आम हो गई हैं। बबूल के पेड़ में कांटे बहुत होते हैं। लोग इससे बचकर निकलते हैं। भाई बबूल के कांटों से बचकर तो निकल जाओंगे पर जो अपने आसपास स्वार्थरूपी कांटों का घना जंगल बो रखा है, उससे कहां तक बच पाओंगे? लोक व्यवहार में चाल–चलन से खराब, व्यसनी, जुआरी शराबी आदि को बबूल का पेड़ समझते हैं। बबूल में कांटे होते हैं। वे उस्ताद होते हैं, जो कांटे से कांटा निकालते हैं।

देश की जनता ही है भारतमाता

-जवाहरलाल नेहरू, प्रथम प्रधानमंत्री

(एक साधन संपन्न परिवार में पला–बड़ा हुआ जवाहर लाल नेहरू युवावस्था में ही आम जनता की चिंता करता था। देश के स्वतंत्रता संग्राम में उसने बढ़चढ़ कर भाग लिया, जेलों में गया। उसका मानना था कि जिस चीज का सबसे अधिक महत्व है, वह है भारत की जनता। भारतमाता देश के करोड़ों लोग हैं जिनमें हट्टा–कट्टा जाट भी शामिल है, इसी जनता जनार्दन की जय ही भारत माता की जय है। अधिक जानकारी के लिये पढ़ें यह ज्ञानवर्धन लेख।)

पुस्तकों, प्राचीन स्मारकों और विगत सांस्कृतिक उपलब्धियों ने यद्यपि मुझमें एक हद तक भारत की समझ पैदा की, लेकिन मुझे उनसे संतोष नहीं हुआ, न ही वे मुझे वह उत्तर दे सकीं, जिसकी मैं तलाश कर रहा था। वर्तमान मेरे लिए, और मुझ जैसे बहुत से अन्य लोगों के लिए मध्ययुगीनता, भयंकर गरीबी व दुर्गति और मध्य वर्ग की कुछ–कुछ सतही आधुनिकता का विचित्र मिश्रण है। मैं अपने वर्ग और अपनी किस्म के लोगों का प्रशंसक नहीं था, फिर भी भारती संघर्ष में नेतृत्व के लिए मैं निश्चित रूप से इसी वर्ग की ओर देखता था। यह मध्य वर्ग बंदी और सीमाओं में जकड़ा हुआ महसूस करता था और खुद तरक्की और विकास करना चाहता था। अंग्रेजी शासन के ढांचे के भीतर ऐसा न कर पाने के कारण उसके भीतर विद्रोह की चेतना पनपी। लेकिन यह चेतना उस ढांचे के खिलाफ नहीं जाती थी, जिसने हमें रौंद दिया था। ये उस ढांचे को बनाए रखना चाहते थे और अंग्रेजों को हटाकर उसका संचालन खुद करना चाहते थे। ये मध्य वर्ग के लोग इस हद तक इस ढांचे की पैदाइश थे, कि उसे चुनौती देना या उसे उखाड़ फेंकने का प्रयास करना इनके बस की बात नहीं थी।

नई ताकतों ने सिर उठाया और वे हमें ग्रामीण जनता की ओर ले गईं। पहली बार एक नया और दूसरे ढंग का भारत उन युवा बुद्धिजीवियों के सामने आया, जो इसके अस्तित्व को लगभग भूल ही गए थे या उसे बहुत कम अहमियत देते थे। यह दृश्य बेचैन कर लेने वाला था– अपनी भयंकर दुर्दशा और समस्याओं के विस्तार के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि उसने हमारे कुछ मूल्यों और निष्कर्षों में संदेह उत्पन्न कर दिया था। तब हमने भारत के वास्तविक रूप की तलाश शुरू की और इससे हमारे भीतर इसकी समझ और द्वंद्व, दोनों ही पैदा हुए। हमारे भीतर तरह–तरह की प्रतिक्रियाएं हुईं, जो हमारे पिछले माहौल और अनुभव पर निर्भर थीं। मेरे लिए यह सही अर्थों में नई तलाश के लिए यात्रा थी।

मैं आम जनता की अवधारणा को काल्पनिक नहीं बनाना चाहता। जहां तक संभव हो, मैं उनके बारे में मात्र सैद्धांतिक अमूर्त सत्ता के रूप में सोचने से बचाने की कोशिश करता हूं। मेरे लिए भारत के लोगों का अपनी सारी विविधता के साथ वास्तविक अस्तित्व हैं उनकी विशाल संख्या के बावजूद मैं उनके बारे में अनिश्चित समुदायों के रूप में नहीं, व्यक्तियों रूप में सोचने की कोशिश करता हूं।

अक्सर जब मैं एक के बाद एक सभा में जाता, तो श्रोताओं से मैं अपने इस देश की चर्चा करता– हिन्दुस्तान की और साथ ही भारत की। मैंने शहरों में ऐसा काम किया, क्योंकि वहां के श्रोता अपेक्षाकृत आधुनिक थे और वे अधिक दमदार भाषण की अपेक्षा करते थे। पर सीमित नजरिये वाले किसानों को मैंने इस महान देश की बाबत बताया, जिसकी मुक्ति के लिए हम संघर्ष कर रहे हैं, कि कैसे इसका हर हिस्सा दूसरे से भिन्न होते हुए भी भारत है। मैंने उन्हें उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक किसानों की सामान्य समस्याओं की जानकारी दी, और उस स्वराज की भी, जो सबके लिए और भारत के हर हिस्से के लिए एक–सा होगा, कुछ विशेष लोगों के लिए नहीं। मैंने उन्हें सुदूर उत्तर–पश्चिमी में खैबर पास से कन्याकुमारी या केप कोमरिन तक अपनी यात्रा के बारे में बताया। मैंने बताया कि कैसे हर जगह मुझसे किसानों ने एक जैसे सवाल पूछे, क्योंकि उनकी समस्याएं समान थीं– गरीबी, कर्ज, निहित स्वार्थ, जमींदार, महाजन, भारी लगान और कर, पुलिस के अत्याचार, और ये सब उस ढांचे में लिपटे हुए थे, जिसे हमारे ऊपर विदेशी हुकूमत ने आरोपित किया था। साथ ही यह भी कि रात भी सबके लिए आनी चाहिए। मैंने इस बात की कोशिश की कि वे भारत को अखंड मानकर उसके बारे में सोचें। साथ ही थोड़ा–बहुत उस विराट विश्व के बारे में भी सोचें, जिसके कि हम एक हिस्सा हैं।

यह काम बहुत आसान नहीं था, किंतु उतना मुश्किल भी नहीं था, जैसा मैंने सोचा था। हमारे प्राचीन महाकाव्यों, हमारी परागाथाओं व दंत–कथाओं की उन्हें पूरी जानकारी थी। इस साहित्य ने अपने देश की अवधारणा से उन्हें परिचित करा दिया था।

कभी–कभी जैसे ही मैं किसी सभा मं पहुंचता था, मेरे स्वागत में अनेक कंठाओं से स्वर गूंज उठता था– 'भारत माता की जय।' मैं उनसे अचानक प्रश्न कर देता कि इस पुकार से उनका क्या आशय है? यह भारत माता कौन है, जिसकी वे जय चाहते हैं, मेरा यह प्रश्न उन्हें मनोरंजक लगता और चकित करता। उनकी ठीक–ठीक समझ में नहीं आता कि वे मुझे क्या जवाब दें, और तब वे एक–दूसरे की ओर, और फिर मेरी ओर ताकने लगते। मैं बार–बार सवाल करता जाता। आखिर एक हट्टा–कट्टा जाट, जिसका न जाने कितनी पीढ़ियों से मिट्टी से अटूट नाता है, जवाब में कहता कि यह भारत माता हमारी धरती है, भारत की प्यारी मिट्टी है। मैं फिर सवाल करता– 'कौन सी मिट्टी? उनके अपने गांव के टुकड़े की, या जिले और राज्य के तमाम टुकड़ों की, या फिर पूरी भारत की मिट्टी?'

प्रश्नोत्तर का यह सिलसिला तब तक चलता रहता, जब तक वे प्रयत्न करते रहते और आखिर कहते कि भारत वह सब कुछ तो है ही, जो उन्होंने सोच रखा है, इसके अलावा भी बहुत कुछ है। भारत के पहाड़ और नदियों, जंगल और फैले हुए खेत, जो हमारे लिए खाना मुहैया करते हैं, सब हमें प्रिय हैं। लेकिन जिस चीज का सबसे अधिक महत्व है, वह है भारत की जनता, उनके व मेरे जैसे तमाम लोग, वे सब लोग, जो इस विशाल धरती पर चारों ओर फैले हैं। भारत माता मूल रूप से यही करोड़ों लोग हैं, और उनकी जय का अर्थ है, इसी जनता–जनार्दन की जय। मैंने उनसे कहा कि तुम भारत माता के हिस्से हो, एक तरह से तुम खुद ही भारत माता हो। जैसे–जैसे यह विचार धीरे–धीरे उनके दिमाग में बैठता जाता, उनकी आंखें चमकने लगतीं, मानों उन्होंने कोई महान खोज कर ली हो।

(साभार– भारत की खोज से साभार)

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।